अप्रैल १९५६

मूल्य १२ आने

पयटन सम्बन्धी जानकारी के लिए इनसे पत्र-व्यवहार कीजिए.

१ रीजनल टूरिस्ट आफिसर,
१२३, क्वीन्स रोड,
चर्चगेट, बम्बई (फोन न० ३३१८५ और ३२४४६)

२ रीजनल टूरिस्ट आफिसर,
१४-१६, गवर्नमेण्ट प्लेस ईस्ट, एस्प्लेनेड मेन्शन्स,
कलकत्ता (फोन न० २३-२८१९)

३ रीजनल टूरिस्ट आफिसर,
८८, क्वीन्सवे, नई दिल्ली
(फोन न० ४२७४२ और ४८६४९)

४ रीजनल टूरिस्ट आफिसर,
३५, माउन्ट रोड, मद्रास,
(फोन न० ८६९९९ और ८६२४९)

५ टूरिस्ट रिसेप्शन एण्ड इन्फर्मेशन आफिसर,
गवर्नमेण्ट आफ इण्डिया टूरिस्ट आफिस,
दि बन्द, श्रीनगर (फोन न० ५४)

मार्ग-दर्शिका

पश्चिम बंगाल और आसाम

प्रकाशक

पर्यटन विभाग,

परिवहन मंत्रालय, नई दिल्ली

एक मणिपुरी नर्तकी

प्रस्तावना

"ताज महल" और अन्य प्रसिद्ध स्थानो को देखने के बाद भारत की यात्रा और सैर करने वाले यात्री के मन मे यह इच्छा उत्पन्न होनी स्वाभाविक है, कि अब "पूर्व की ओर चलो ।" किन्तु इससे यह न समझना चाहिए कि यह उस प्रदेश का निमत्रण है, जिसको बहुधा "रग बिरगा या छैला पूर्व" कहा जाता है । यह तो केवल पूर्वी भारत को देखने का आमत्रण है। पश्चिम बगाल और आसाम के दो राज्य पूर्वी भारत के अत्यन्त महत्त्वपूर्ण भाग है। अगले पृष्ठो मे इन दोनो का ही वर्णन किया गया है।

बगाली और आसामी बहुत सी बातो मे एक दूसरे से बहुत भिन्न है, परन्तु फिर भी दोनो मे अनेक समानताएँ है। दोनो उस प्रदेश की सन्तान है जिसकी भूमि अपेक्षाकृत मुलायम है। इस सामान्य सम्पत्ति का दोनो की सामान्य प्रवृत्ति और उनके चरित्र के निर्माण मे एक बहुत बड़ा हाथ है। इनके कारण इनकी प्रकृति मे मृदुता और कोमलता आ गई है। भारत के इस हिस्से में जो कुछ लिखा-पढा जाता है, जो कुछ बोला और सुना जाता है और जो कुछ किया जाता है, उन सब में यह बात पाई जाती है। इस भाग मे दो भाषाएँ बोली जाती है; बगला और आसामी। इन दोनो भाषाओ का मूल स्रोत एक है,—

भारतीय-आर्य भाषा। यह दोनो को एक करने वाला और जोड़ने वाला एक सामान्य तत्व है। एकता उत्पन्न करने वाले इस तत्व की अमिट छाप जनता की सस्कृति पर अकित है।

इस पार्श्वभूमि के साथ दोनो राज्यो को अलग-अलग देखना और समझना सरल होगा।

पश्चिम बंगाल

इतिहास

प्राचीन काल मे बगाल गौड, वग और बगाल जैसे अनेक नामो से प्रसिद्ध था। वेद के सूक्तो में बगाल का नाम नही आता। अत्यन्त प्राचीन काल की आर्य सभ्यता की जो सीमा शास्त्रो और स्मृतियो में लिखी है, बगाल उससे बाहर था। फिर भी यह एक सुसस्कृत सस्कृति का—सम्भवत मगोल और द्रविड सस्कृतियो के मेल से बनी सस्कृति का--केन्द्र था। अति प्राचीन काल में ही पश्चिम के आर्य ऋषियो और विद्वानो का ध्यान इधर आकृष्ट हुआ। साख्य दर्शन के रचयिता और साख्य मत के प्रसिद्ध सस्थापक कपिल मुनि का आश्रम सुन्दरवन के डेल्टा मे एक द्वीप के पास था। यह प्रसिद्ध है कि कपिल मुनि की सलाह से ही राजा भगीरथ स्वर्ग से गगा को भूमि पर लाये और इस दिव्य नदी को सागर तक ले गये। इस प्रकार बगाल के आध्यात्मिक और भौतिक जीवन में गगा का प्राचीन और ऐतिहासिक काल से विशेष महत्व है।

सिकन्दर के आक्रमण के समय वग के लोग 'गगारिदाई' या गगा प्रदेश के निवासी के नाम से प्रसिद्ध थे। मगध-साम्राज्य के उदय में, जो चन्द्रगुप्त मौर्य के समय में अपने विस्तार और गौरव के शिखर पर पहुँचा हुआ था, इनका प्रमुख हाथ रहा है। महरौली के लोहस्तम्भ-लेख में वर्णित राजा चन्द्र का वग प्रदेश के लोगो ने सयुक्त होकर दृढता से मुकाबला किया। पर अन्त में ये लोग उस महान अज्ञात साम्राज्यनिर्माता द्वारा पराजित हुए। बगाल सम्राट् समुद्रगुप्त के विशाल साम्राज्य का एक भाग था।

ग्रीक इतिहासकारो ने 'गगारिदाई' सेना का बडे विस्तार से बडा रोचक वर्णन किया है। इस सेना मे ४,००० हाथी थे। हाथियो के इस बडे जमाव को देखकर वे बहुत प्रभावित हुए। उनके लिये यह एक सर्वथा नवीन बात थी। इसी प्रकार गुप्त सम्राटो के दरबार मे आये विदेशी लोग भी इन लोगो की नौका खेने की कला और कौशल देखकर मत्रमुग्ध रह गये। बगाल मे नौकाओ और किश्तियो का बहुत अधिक व्यवहार होता है। गुप्त सम्राट् के दरबारी लोगो के लिये यह एक अद्भुत बात थी। इस देश के एक महान कवि कालिदास ने अपने प्रसिद्ध महाकाव्य 'रघुवश' मे भगवान रामचन्द्र के परदादा रघु की दिग्विजय-यात्रा का वर्णन करते हुए बगाल का भी वर्णन किया है। इससे मालूम होता है कि कवि इस प्रदेश के प्रत्येक हिस्से और उसकी प्राकृतिक एव भौगोलिक अवस्थाओ और लोगो के जीवन से भलीभाँति परिचित था। भारत की दो महान शक्तिशाली और वेगवती नदियो—गगा और ब्रह्मपुत्र—और इनकी शाखाओ से सिंचित प्रदेश मे रहने वाले लोगो के सामुद्रिक और नौकानयन की दक्षता से कवि प्रभावित हुआ है और वह इसका वर्णन करना नही भूला है। बगाल के समुद्रतट मे दृष्टिगोचर होने वाला दृश्य भी उस की दृष्टि से नही बचा और महाकवि ने उसको अपनी अमरवाणी द्वारा पद्यो मे बांध दिया है।

बगाल के प्राचीन इतिहास का सबसे अधिक गौरवपूर्ण काल है—पालवशी राजाओ का शासन-काल। पालवशी राजा साहित्य और कला के प्रेमी और सरक्षक थे। यद्यपि उस समय उत्तर भारत के स्वामित्व के लिये पालवशी राजाओ, कन्नौज के गुर्जर-प्रतिहारो और दक्खिन के राष्ट्रकूटो के बीच त्रिकोणात्मक युद्ध चल रहा था, परन्तु फिर भी पालवशी नरेश समुद्रपार के देशो मे व्यापार बढाने और सामुद्रिक साहसिक कार्यों की ओर ध्यान देते रहे। इसी काल में बगाल के कलाकारो ने हिन्देशिया और हिन्दचीन के स्थापत्य और मूर्तिकला के

ढाँचे का निर्माण किया तथा वगाल के पण्डितो और विद्वानो ने हिमालय के हिम-मण्डित शिखरो को पार कर तिब्बत में भगवान वुद्ध का दिव्य सदेश पहुँचाया।

मुस्लिम विजेताओ ने देश के अन्य भागो के समान वगाल को भी जीता। पर दिल्ली के सुलतानो के राज्य मे वगाल कभी स्थायी रूप से नही रहा। वावर ने जव इस देश पर हमला किया तव इस भाग मे प्रसिद्ध वैष्णव सन्त चैतन्यदेव समता के सदेश का प्रचार कर रहे थे और विश्वास, प्रेम तथा भक्ति द्वारा मुक्ति पाने का मार्ग जनता को वता रहे थे। आपके अनुयायियो मे सैकडो मुसलमान भी थे।

मुगलो के जमाने में अकवर के एक सेनापति मानसिंह ने वगाल को जीता और यह प्रदेश भी मुगल साम्राज्य का एक भाग हो गया। सम्राट् औरगजेव के निवन के वाद एक मुस्लिम गवर्नर के अधीन वगाल लगभग स्वतत्र हो गया। वगाल का अन्तिम स्वतत्र शासक सिराज था। यह १७५७ मे प्लासी की लडाई में अग्रेजो से हार गया। इसके अपने ही साथियो और रिश्तेदारो ने इसके साथ विश्वासघात किया। इसकी पराजय का यह एक मुख्य कारण हुआ। उसके विश्वस्त और भरोसे के सेनापतियो मे हिन्दू सेनापति और जनरल थे। शाक्त मत के प्रसिद्ध ब्राह्मण पुजारी रामप्रसाद के भक्तिपूर्ण गीत नवाव को अत्यन्त प्रिय थे, और सारे देश मे यह वात मशहूर थी। नवाव सिराजुद्दौला का नाम आज भी वगाल के घर-घर मे प्रत्येक की जिह्वा पर है।

भारतीय पुनर्जागरण

वगाल मे पुनर्जागरण का प्रभाव विशेपत तीन भागो मे दिखाई दिया। भारत के जीवन पर भी सामान्य रूप से इसका वहुत कुछ प्रभाव पडा। इस समय जो तीव्र सास्कृतिक प्रवाह आया, और वाद मे उसका जिस रूप मे विकास हुआ, वह आधुनिक भारत की पार्श्वभूमि का एक आवश्यक अश और हिस्सा है। आज यह देश जिस सक्रमण काल में से गुजर रहा है, उसको ठीक-ठीक समझने और

उसका यथार्थरूप जानने के लिये उस सांस्कृतिक प्रवाह की मुख्य धाराओं का संक्षिप्त वर्णन करना यहाँ आवश्यक है।

बात कुछ विचित्र मालूम होती है, पर यह सच है कि भारत और पश्चिम के बीच मेल पहले-पहल साहित्य के माध्यम से हुआ। हिन्दू कालेज—अब प्रेसीडेंसी कालेज—१८२४ में स्थापित हुआ था। कुछ दिनों के वास्ते अंग्रेजी शिक्षा ने भारतीय ज्ञान-विज्ञान की शिक्षा को शिक्षा के क्षेत्र में ही बहिष्कृत कर दिया। शेक्सपियर और मिल्टन नये आन्दोलन के नेताओं के वरदायक देवता बन गये। किन्तु बंगाल के शिक्षित वर्ग ने इस सत्य को शीघ्र ही अनुभव कर लिया कि जनता अपनी भाषा में ही अपने आप को, अपनी आत्मा को भली भाँति प्रकट कर सकती है। फलत बंगला भाषा का जन्म हुआ। बंगला भाषा ने अनेक महान साहित्यिकों को उत्पन्न किया। एक को तो साहित्य का 'नोबुल पुरस्कार' भी मिला। बंगला भाषा के साहित्य ने अन्य भारतीय भाषाओं के साहित्य को भी प्रभावित किया। इस समय यूरोपीय पुरातत्वविद भी अपना खोज-कार्य कर रहे थे। इस खोज का सुखद परिणाम यह हुआ कि भारतीयों ने नवीन भारत को खोज निकाला। संस्कृत की शिक्षा का पुन प्रचार किया गया। जिस उत्साह के साथ अंग्रेजी को ग्रहण किया गया था उसी उत्साह और उमंग से संस्कृत को भी अपनाया गया। इसके साथ-साथ आधुनिक बंगला साहित्य का विकास हुआ। बंगला भाषा में अंग्रेजी भाषा के बहुत से शब्द, वाक्यांश, मुहावरे आदि घुल मिल गये हैं। ये लोगों की बोली में समा गये हैं। कोई भी यात्री बंगाली लोगों को आपस में बातें करते हुए सुनकर इसका अनुभव कर सकता है। बंगाली आपस में बातें करते हुए अंग्रेजी शब्दों का जिस मात्रा में और जिस संख्या में प्रयोग करते हैं, उसको सुन कर यात्री आश्चर्यचकित हुए बिना नहीं रहेगा।

नई शिक्षा का जो एक प्रभाव और हुआ, वह है मानवतावाद। यह बहुत व्यापक रूप में फैला हुआ है यद्यपि यह प्रत्यक्ष रूप से कम दिखाई

देता है। इसका मतलब है—पूर्व और पश्चिम का मिलन, प्राचीन और अर्वाचीन, नये और पुराने के बीच समन्वय और सम्मिलन। इन दोनो का सुन्दर सम्मिलन और इसकी हृदयग्राही अभिव्यक्ति, कवीन्द्र रवीन्द्रनाथ ठाकुर की रचनाओ में हुई है। इस महान कवि के काव्यो, गीतो और अन्य रचनाओ में यह युग-सम्मिलन अपने सर्वोत्तम और सुन्दर रूप मे प्रगट हुआ है। कवीन्द्र रवीन्द्र से पश्चिमी जगत् पूर्णत परिचित है। परन्तु यह सम्मिलन सरलता से और अपने आप नही हो गया। इससे पहले भारी सघर्ष हुआ। यह माइकेल मधुसूदन दत्त के जीवन से प्रकट है। उन्होने इस विचार से कि उनको कोई भारतीय न कहे, ईसाई धर्म की दीक्षा ले ली। उन्होने केवल अग्रेजी में ही नही, वरन आधी दर्जन प्राचीन और नवीन यूरोपीय भाषाओ में कविताएँ लिखी, वगला भाषा और बगाल को हेय माना और प्रगट रूप से इसकी निन्दा की। परन्तु बाद को इसी महान कवि ने वगला मे पहली ऐतिहासिक कविता लिखी। इसके सौंदर्य और इसकी उच्चता तक बहुत ही कम कवि पहुँच पाये है। उसके सौंदर्य की समता कठिनाई मे ही हुई होगी, सभवत कभी नही।

नवीन पुनर्जागरण ने अब अपनी स्थिति दृढ कर ली है। आधुनिक भारत इसकी मानवीय उपज है। आधुनिक भारत को अपने अतीत एव प्राचीन गौरव पर अभिमान है। परन्तु युवा पश्चिम से नई चीज सीखने और लेने मे उसे कोई विरोध नही है। आज का भारत लोकतन्त्रा-त्मक गणतत्र है। भारतीय जनता धीरे-धीरे, पर निश्चयपूर्वक और दृढता से अपनी सब समस्याओ के प्रति धर्मनिरपेक्ष मनोवृत्ति धारण कर रही है। यह उसी मानवता के पौधे का फल है, जो कालेज स्क्वायर के एक मील के दायरे के अन्दर उस समय लगाया गया था।

परन्तु भारत में धर्मनिरपेक्षवाद कभी भी धर्महीनता का पर्यायवाची नही हो सकता क्योकि धर्म भारत के रोम-रोम मे, उसकी अन्तरात्मा में और हृदय तक मे समाया हुआ है। धर्म ने यहाँ अपने को

नूतन मानवतावाद के अनुकूल बना लिया है। इसका परिवर्तित रूप न केवल समाज सुधारक ब्रह्मसमाज के उदय और उसकी स्थापना मे दिखाई दिया, वल्कि हिन्दुत्व के पुनर्जन्म मे भी प्रगट हुआ आगे चलकर इस नवीन हिन्दू धर्म के तीन महान व्याख्याता हुए—पडित ईश्वरचन्द्र विद्यासागर, वकिमचन्द्र चटर्जी और स्वामी विवेकानन्द। 'कालेज स्क्वायर' मे विद्यासागर जी की प्रतिमा अवस्थित है। वगाल के जीवन और वगला साहित्य पर इनके प्रभाव की अमिट छाप पग-पग पर दिखाई देती है। इनका हिन्दू धर्म आत्मकेन्द्रित नही था, उसका आधार नैतिकता था, उसका लक्ष्य था आत्म-प्रकाशन, आत्म-अभिव्यक्ति, आत्म-विकास और आत्म-प्रसार, और उसकी शक्ति थी कमजोर पारलौकिक वातो को मानने से इन्कार करने मे। स्वामी विवेकानन्द ने अपने देशवासियो को प्रेरणा दी कि पश्चिम के सारतत्त्व को आत्मसात् कर लो, जज्ब कर लो और अपने मे मिला लो। उन्होने खुद वेदान्त का प्रचार करने और मानवता की सेवा के वास्ते 'रामकृष्ण सेवाश्रम' नामक सस्था का दुनिया भर मे जाल विछाया।

एक बडे राजनीतिक समझौते के फलस्वरूप पश्चिम वगाल राज्य की स्थापना १४-१५ अगस्त १९४७ की अर्द्धरात्रि को हुई। पहले जो वगाल था, वह दो हिस्सो मे वँट गया। पश्चिम वगाल का राज्य भारत गणतन्त्र का एक भाग बना और पूर्वी वगाल पूर्वी पाकिस्तान के नाम से पाकिस्तान का हिस्सा रहा।

पश्चिम वगाल राज्य के पूर्व मे आसाम और पूर्वी पाकिस्तान, दक्षिण मे वगाल की खाडी, पश्चिम मे विहार और उडीसा और उत्तर मे नेपाल और भूटान है। इसका क्षेत्रफल ३०,७७५ वर्गमील है। इसकी आवादी २ करोड ४८ लाख १० हजार है। इसकी वार्षिक आमदनी लगभग ३८ करोड रुपये है। प्राकृतिक दृष्टि से पश्चिम वगाल की भूमि समतल मैदान है, जिसमे जगह-जगह नदियाँ बहती है। दार्जिलिंग के पहाडो और जलपाईगुडी की सिनचुला पहाडियो के सिवाय सारे मैदान

मे और कही कोई पहाडी नही है। इसकी जनसख्या अत्यधिक सघन है। परन्तु इसकी शोभा निराली है। जिधर भी नजर उठाओ, उधर ही हरियाली-ही-हरियाली नजर आती है। नदियो, नालो और प्रवाहो के दोनो ओर ऊँचे पेडो की पक्तियाँ दूर तक चली गई है। बाँस के कुज गाँवो की शोभा बढा रहे है। गाँव सघन वृक्षो से ढँके से मालूम होते है और ये यात्री को मत्रमुग्ध कर देते है।

पश्चिम बगाल की मुख्य नदियो के नाम है,—हुगली, दामोदर, रूपनारायण और तिस्ता। तिस्ता नदी सिक्किम राज्य को सीचती हुई इस राज्य में आती है।

बगाल की खाडी से आर्द्र हवाएँ आती हैं। इसके कारण इस राज्य की जलवायु, विशेषत बरसात मे बहुत नम होती है किन्तु सर्दियो के मौसम मे, सितम्बर से फरवरी तक सारे राज्य में जलवायु बहुत आनन्ददायक होती है। इसी समय फसल कट कर घर में आती है और गाँव वाले बहुत प्रसन्न होते है। यही क्रिकेट और पोलो सदृश खेलो का मौसम है। इन्ही दिनो कला-प्रदर्शिनियो का आयोजन, नाटको का रगमच पर अभिनय आदि सास्कृतिक और मनोरजन के समारोह होते है। इस समय चारो ओर खुशहाली और प्रसन्नता ही दृष्टिगोचर होती है।

नदी घाटी परिकल्पना

पचवर्षीय योजना के अन्तर्गत बगाल और आसाम मे बहुत सी परिकल्पनाएँ आरम्भ की गयी है। इनमे से कुछ महत्वपूर्ण परिकल्पनाओ का वर्णन नीचे किया जा रहा है।

दामोदर नदी (३६८ मील लम्बी) छोटा नागपुर मे निकल कर बहती हुई पश्चिम बगाल मे आती है और हुगली नदी में मिल जाती है। दामोदर नदी का हुगली मे मेल हुगली नदी के समुद्र में मिलने मे कुछ पहले और कुछ ऊपर होता है। यह २,५०० वर्गमील भूमि को सीचती है। इसमे अचानक बाढ आने मे धन-जन का अपार नुकसान होता

था। दामोदर नदी घाटी परिकल्पना पर इस समय काम जारी है। इसकी व्यवस्था और इसके प्रबन्ध के लिये दामोदर घाटी निगम (अमेरिका की 'टी० वी० ए०' के समान एक स्वतन्त्र सगठन) है। इस परिकल्पना के पूरे हो जाने पर न केवल बाढो का आना बन्द हो जायगा, बल्कि इससे एक बडे इलाके की सिचाई भी होगी, जिससे उत्पादन भी और अधिक बढेगा। इसके साथ बडे परिमाण मे बिजली भी पैदा होगी और यह बिजली उद्योगो मे काम आयगी। पचवर्षीय योजना मे इसको प्राथमिकता दी गई है। जब यह पूरी हो जायगी, तब देश के इस भाग की बढती हुई जरूरते पूरी हो सकेगी। इस देश की आवश्यकता का अनुमान इस बात से सहज मे किया जा सकता है कि इस भाग मे ८३९ ३ व्यक्ति प्रति वर्गमील बसे हुए है। इतनी सघन आबादी देश के अन्य किसी भाग मे बहुत कम है। अमेरिकी पत्रकार मि० रेमाड स्विग ने इस विषय मे हाल ही मे लिखा है—"डी० वी० सी०' (दामोदर वैली कारपोरेशन) को पचवर्षीय योजना का मोती कहना सर्वथा उचित है। यह कोई अधिक आश्चर्य की बात नही कि इसने अपने आपको विश्व बैंक से कर्ज लेने के योग्य सिद्ध कर दिया है और अब इसको दूसरा कर्ज मिलने वाला है। साथ ही यह ससार मे सम्मान और प्रशसा पाने के भी योग्य है। यह योजना सर्वोत्तम रीति से प्रस्तुत की गयी है। इस कार्य से स्वाधीन जनता ने अपनी स्वतन्त्रता की नीव को दृढ और मजबूत बनाया है।" उत्पाती और विनाशक दामोदर नदी के जल को नियन्त्रित करने के उद्देश्य से सात बाँध बाँधने की योजना बनाई गई है। इससे घाटी की बाढ से रक्षा हो सकेगी। दस लाख क्यूसेक पानी से घाटी का बचाव हो सकेगा। 'बोकारो बिजली घर कार्य कर रहा है। नहरो द्वारा हर साल ९९,००० एकड जमीन की सिचाई होगी। योजना के पूरी हो जाने पर जल सचय करने के वास्ते ८ सागर—'बाँध' तथा इसके साथ-साथ जल-विद्युत पैदा
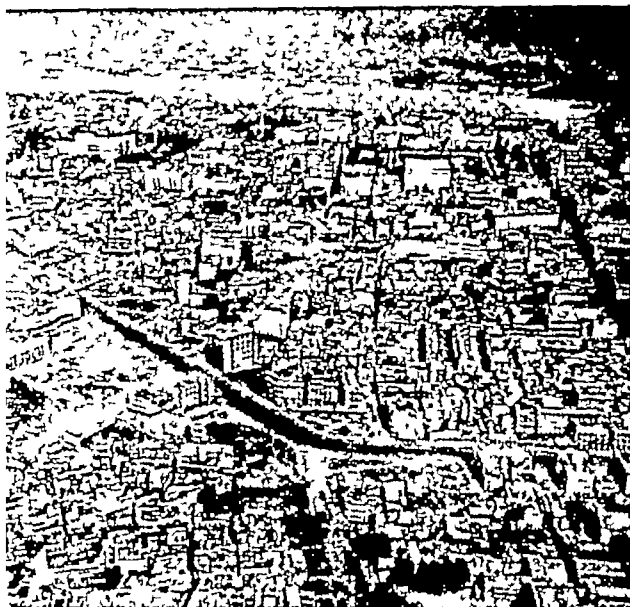
कलकत्ता नगर
का
विहगम दृश्य

करने वाले स्टेशन होगे। इनकी शक्ति २,००,००० किलोवाट की होगी। इनसे प्रेपक (ट्रासमिशन) ग्रिड प्रणाली द्वारा बारहो मास बराबर बिजली मिलेगी। इसके अतिरिक्त दामोदर घाटी निगम को सिंद्री उर्वरक कारखाने के २५,००० किलोवाट की क्षमता के थर्मल स्टेशन से भी अतिरिक्त बिजली प्राप्त होगी। इस प्रकार पनबिजली तथा थर्मल बिजली की कुल मिली जुली शक्ति से ३,००,००० किलोवाट बिजली की माग की पूर्ति हो सकेगी। योजना के पूरी होने पर हजारो एकड जमीन की सिचाई हो सकेगी।

मयूराक्षी परिकल्पना में एक नीचा ईट-पत्थर का बाँध और पश्चिम बगाल में मयूराक्षी नदी के ऊपर एक बाँध शामिल है। इससे ७,५०,००० एकड जमीन की सिंचाई होगी और ४,००० किलोवाट बिजली उत्पन्न होगी।

कलकत्ता

"यह कोई छोटा-मोटा शहर नहीं है," जैसा कि इस शहर में रहने वाले एक अंग्रेज ने इसके विषय में कहा था। १९११ में दिल्ली के राजधानी बनाये जाने पर भी यह महानगरी सम्पूर्ण पूर्वी भारत की राजधानी बनी रही। भारत के इस भाग की यात्रा करने वाले यात्री के लिये कलकत्ता ही ऐसा स्थान है जहाँ से वह अपनी यात्रा आरंभ कर सकता है। यहाँ का हवाईअड्डा शहर से ७ मील दूर उत्तर में है। पूर्व और पश्चिम दोनों ओर जाने वाले विमान यहाँ ठहरते हैं। नदी के परले पार रेलवे का टर्मिनस (अन्तिम) स्टेशन है। यहाँ उपयोगी बन्दरगाह भी है।

कलकत्ते का बन्दरगाह

बन्दरगाह हुगली नदी के बाँए किनारे पर है। हुगली नदी गंगा नदी से निकली तीन धाराओं से मिलकर बनी है। बन्दरगाह नदी के मुहाने से लगभग ८० मील दूर है और 'सैंडहेड' स्थित 'वेस्टन चैनल लाइट वैसल' से १२६ मील दूर है। इस बन्दरगाह में माल आता और यहाँ से देश के दूर-दूर भागों में माल वितरित होता है। यह बन्दरगाह उत्तर प्रदेश, मध्यप्रदेश, बिहार, पश्चिमबंगाल, उड़ीसा और आसाम तथा इसके साथ ही पूर्वी पाकिस्तान की सेवा करता है। यहाँ से हर साल लगभग ९० लाख टन माल जहाजों द्वारा देश-देशान्तर भेजा जाता है। यहाँ से भेजी जाने वाली चीजों में जूट, बोरे, चाय, कोयला, लोहा और इस्पात, कच्ची धातें, खाद्यान्न, पेट्रोल, लकड़ी, नमक आदि मुख्य हैं। सच तो यह है कि भारतीय संघ के समुद्री व्यापार का लगभग आधा व्यापार इसी बन्दरगाह द्वारा होता है।

पोर्ट कमिश्नरों की अपनी १०,८४०. मील लम्बी रेल है, और इसका संचालन भी वे ही करते हैं। यह रेल लाइन पूर्वी रेल के साथ सम्बद्ध है। नौकानयन में सहायता देने के लिये समुद्र से कलकत्ता तक हुगली की जल प्रणाली को जहाज के आने-जाने योग्य रखा जाता है।

शक्तिशाली ड्रेजरो द्वारा मिट्टी निकाल कर प्रणाली को सदा इस योग्य रखा जाता है कि उसमे जहाज आ-जा सकें। वन्दरगाह की व्यवस्था की देख-भाल पोर्ट कमिश्नर के अधीन है जिसकी स्थापना १८७० मे की गई थी। पचवर्षीय योजना के अन्तर्गत वन्दरगाह के अधिकारी इसके विस्तृत विकास की अनेक योजनाओ पर विचार कर रहे है। इन योजनाओ के पूरा होने के वाद औद्योगिक और व्यावसायिक दृष्टि से कलकत्ता का महत्व और भी अधिक बढ जायगा।

अन्य नगरो के मुकाबले मे कलकत्ता अभी एक नया शहर है। १६९० से पहले इस नगर की कल्पना भी नही की गयी थी। ईस्ट इण्डिया कम्पनी के एक एजेण्ट जाव चारनाक ने इस स्थान को १६९० मे वसने और इम देश के लोगो के साथ व्यापार करने के लिये चुना।

कलकत्ता की सैर चौरगी मे शुरू करना ठीक होगा। यात्रारम्भ की दृष्टि से यह स्थान सर्वोत्तम है। यह शहर के मध्य में और काम-काज और कारोवार का अत्यधिक व्यस्त केन्द्र है। यही पर एशिया के कुछ सर्वोत्तम होटल, मिनेमा तथा रेस्तोराँ (उपाहार गृह) है।

कलकत्ता एक मार्वभौमिक शहर है। यहाँ दुनिया के सव देशो और भारत के मव राज्यो के लोग वमे हुए है। यह यात्री को कलकत्ता में पहुँचने ही मालूम हो जाता है। किमी भी दिन इमकी सडको, गलियो और राजपथो पर मव तरह के सव देशो के लोग आते-जाते हुए दिखाई देते है। माधारणत लोगो की वेश-भपा यूरोपीय ढग की है, पर ये लोग ववई, मद्रास, पजाव, वर्मा और चीन जैमे विभिन्न स्थानो के होते है। वेश-भूषा की मदृशता और एकरूपता भी उनके उद्भव की विभिन्नता को छिपा नहीं पाती। यहाँ शाम और रात्रि के आमोद-प्रमोदो की भी कमी नही है। रात्रि-क्लवे यहाँ वहुत है। यूरोप खण्ड के 'कंवरे' कलाकार उन क्लवो मे प्राय अपनी कला का प्रदर्शन करते रहते है।

चौरंगी की एक गली का दृश्य
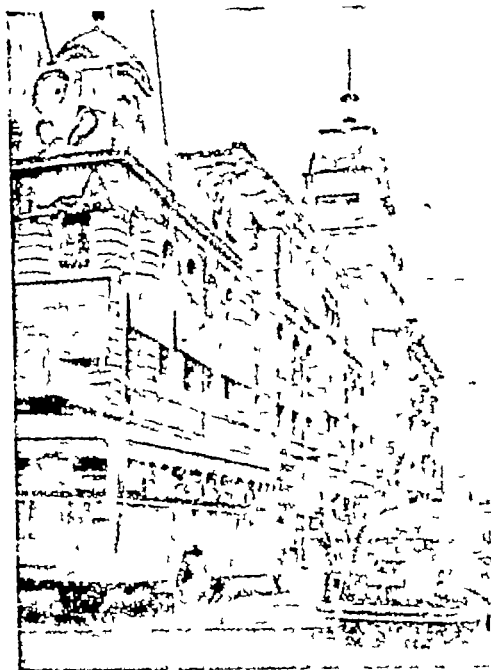
'नीओन' गैस की रोशनी से रोशन दूकानें, होटल, रेस्तोरां (उपाहारगृह) राह चलते लोगों का ध्यान बरबस अपनी ओर खींचते हैं। शहर के विभिन्न भागों में हर शाम को नर-नारी इनमें आते हैं। पटरियाँ सदा जनाकीर्ण रहती हैं। होटलों के घेरों में किताबों की दूकानें हैं जिनमें विविध प्रकार का साहित्य मिलता है।

चौरंगी के सामने 'ऑक्टरलोनी' है। १६५ फुट ऊँचा यह एक प्रभावशाली स्मारक है। ऑक्टरलोनी एक ब्रिटिश जनरल था जिसने अनेक युद्धों में बहादुरी दिखाई और नाम कमाया था। उसी जनरल का यह स्मारक है। इसकी गैलरियों से कलकत्ते का बड़ा सुन्दर दृश्य दिखाई देता है। इसके बारे में ख्याल किया जाता है कि इसका आधार मिस्री ढंग का है, इसके खम्भे सीरियाई प्रणाली के हैं और इसका गुम्बज

तुर्की शैली का है। इस स्मारक के सामने एक खुला विस्तृत 'मैदान' फैला हुआ है।

मैदान

मैदान लगभग दो मील लम्बा और एक मील चौडा है। इसके असंख्य पेडो की छाया मे प्रातःकाल और सायकाल नर-नारी बडी संख्या में जमा होते है। शोर-शराबे से दूर हट कर धीरे-धीरे टहलना, शान्ति के साथ चहल-कदमी करना यहाँ सम्भव है। हरी-हरी घास पर जब कोई चाहे टाँगे पसार कर बैठ कर आराम कर सकता है। हरेक यात्री एकान्त लाभ का इच्छुक होता है।

फुटबाल खेलने के सब क्रीडा-क्षेत्र इस मैदान के अहाते के ही अन्दर है। मैदान का एक भाग 'ब्रिगेड परेड ग्राउण्ड' के नाम से प्रसिद्ध है। यहाँ पर फौज और पुलिस की विशेष अवसरो पर परेड होती है। मैदान में अक्सर सार्वजनिक भाषण और व्याख्यान भी होते है। इसको कलकत्ते का 'हाईडपार्क' कहा जा सकता है।

पूर्व इतिहास

जाब चारनाक के आने से बहुत पहले यहाँ तीन गाँव थे—सूतानटी, गोविंदपुर और कलिकाता। ये गाँव दलदल और जगलो से ढके थे। कलिकाता से इसका नाम कलकत्ता पडा।

कलकत्ता जिस नदी के किनारे पर बसा हुआ था, वह पर्याप्त गहरी थी और समुद्रगामी जहाज इसमे आ-जा सकते थे। जलमार्ग द्वारा उत्तरी भारत के साथ यातायात आशा के अनुरूप ही था। वही सिन्धुगगा का समृद्ध मैदान था।

१६९५ मे एक हिन्दू सरदार ने बगाल के नवाब के विरुद्ध विद्रोह किया। अग्रेजो को, जो इससे पहले ही व्यापार करने की रियायते पा चुके थे, अपने बचाव और अपनी प्रतिरक्षा के वास्ते इन्तजाम करने की भी अनुमति मिल गई। अगले चार सालो में एक किला बनाया गया। इस किले का नामकरण विलियम तृतीय के नाम पर किया

गया। यह किला उस जगह बनाया गया था जहाँ आज 'जनरल पोस्ट आफिस' और ईस्टर्न रेलवे हाउस है। इस प्रकार यह नीव केवल प्रतिरक्षात्मक किले की ही नही, बल्कि एक महान और बराबर फैलने वाले साम्राज्य की भी नीव थी।

किला १७७३ मे बन कर तैयार हुआ। इसके बनाने मे २० लाख पौंड खर्च आया। किले के चारो ओर के जगल साफ कर दिये गये। इससे न केवल 'मैदान' ही निकला, वरन् चौरगी और उससे पूर्व मे सुआयोजित और साफ-सुथरे निवास-गृह और दूकाने भी स्थापित हो गई। "साउथ आफ पार्क स्ट्रीट" को आज बहुत ही अजीब दृष्टि से देखा जाता है। इसका सम्बन्ध उस समय से है जब अग्रेज नदी के पास से उठकर उन्ही दिनो साफ की गई जगह पर बसने के लिये शहर के अन्दर चले गये थे। यह 'मैदान' ही है जो शहर के इस भाग को बसने के योग्य इतना सुन्दर बनाता है। इस इलाके के बहुत से 'बोर्डिंग हाउसो' (निवास और भोजन के स्थान) और चम्मरियो (जहाँ बहुत-से लोग एक जगह रहते और एक मेस मे खाते है) मे केवल वे ही अग्रेज नही ठहरते जो भारतीय जीवन बिताने के लिए यहाँ बस गये है, बल्कि आकस्मिक आने वाले यात्री भी ठहरते है। "पार्क स्ट्रीट" खरीद-फरोख्त की दृष्टि मे भी एक बहुत बडा केन्द्र है।

विक्टोरिया स्मारक

'विक्टोरिया स्मारक' बनाने का विचार भारत के तत्कालीन वायसराय लार्ड कर्जन ने किया। इसका आलेखन (डिजाइन) शिल्प शास्त्री सर विलियम एमरसन ने तैयार किया था। इसकी इमारत पर सारसेनिक शैली का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है। १९२१ मे इसका उद्घाटन प्रिंस आफ वेल्स (अब ड्यूक आफ विंडसर) ने किया। दक्षिण कलकत्ता मे यह एक बडी और मुख्य इमारत है। बगाल मे शिल्प और वास्तुकला की दृष्टि से आकर्षण का यह एक मुख्य केन्द्र है। इसका एक कारण है कि बगाल की जमीन की मिट्टी कोमल और
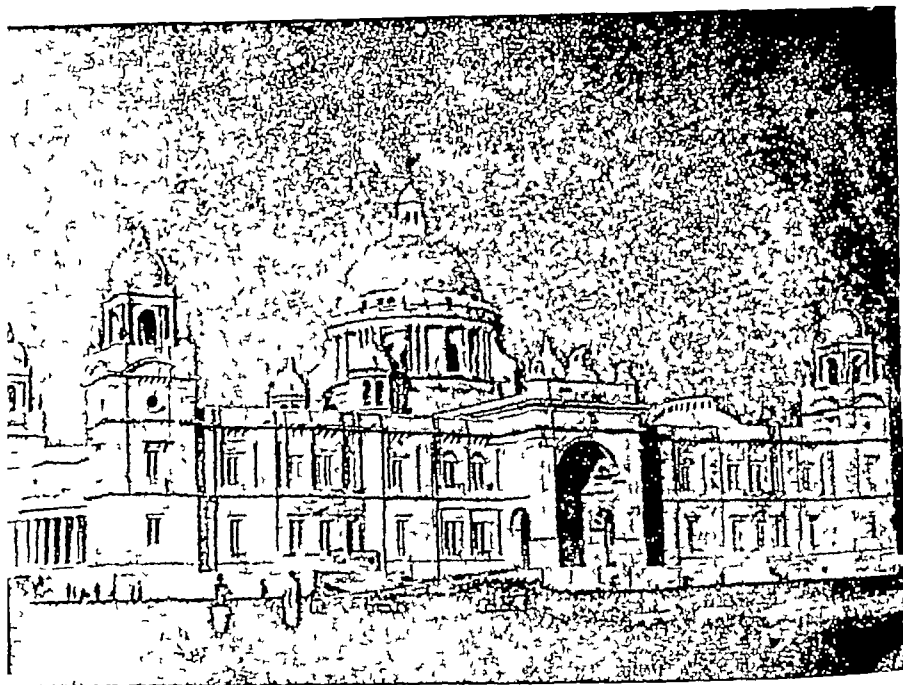
विक्टोरिया स्मारक, कलकत्ता

कछारी है और ऊँची तथा बडी इमारतो के वास्ते यहाँ दृढ आधार साधारणत नही मिलता। यहाँ पर भारतीय इतिहास, विशेपत विक्टोरिया-युग के इतिहास की सामग्री का वटी मात्रा मे सकलन किया गया है।

'रायल गैलरी' मे चित्रो का मग्रह है जिनमे रानी विक्टोरिया के जीवन की विभिन्न घटनाओ का चित्रण किया गया है। ये चित्र राजा एडवर्ड सप्तम द्वारा भेट किये गये थे। गुम्वज के नीचे 'क्वीन हाल' जाते हुए विक्टोरिया की मूर्ति दिखाई देती है जो सर टामस ब्रौक आर० ए० की वनाई हुई है। विक्टोरिया की प्रतिमा उस अवस्था की है, जब कि वह १८ साल की आयु मे राजसिंहासन पर वैठी थी।

इस सारे भवन की प्रधान वस्तु यही है। इसके बाँई ओर दरबार हाल है। निस्सन्देह सारी इमारत में यह सबसे अधिक सुन्दर है। चित्र-गैलरियों में भारतीय दृश्यों को चित्रित करने वाले चित्र आदि हैं। ये चित्र रानी मेरी द्वारा भेंट किये गये थे। जोहन जोपफेनी आर० ए० (१७३३–१८१०) के काफी चित्र यहाँ हैं—जैसे "एम्बेसी आफ हाइडर बेक", "टाइगर हण्ट नियर चन्दननगर", "क्लाउड मार्टिन एण्ड हिज फ्रेंड्स" और "लार्ड कार्नवालिस रिसीविंग दी सन ऑफ टीपू साहिब"। गुम्बज की भीतरी गैलरी में शोभा बढ़ाने वाले भित्ति-चित्र दिखाई देंगे। साथ के हिस्से में ऐतिहासिक रिकार्डो और फारसी की पाण्डुलिपियों का एक बड़ा संग्रह है। यह प्राचीन इतिहास-प्रेमियों के लिये बड़े काम का है।

'स्मारक' सोमवार को छोड़ कर प्रतिदिन खुला रहता है। यह अप्रैल से अक्तूबर तक प्रातः १० बजे से शाम ५ बजे तक और नवम्बर से मार्च तक प्रातः १० बजे से शाम ४ बजे तक खुला रहता है। अन्दर जाने के लिए ७ साल से कम बच्चों से २ आना और वयस्कों से ४ आना प्रवेश शुल्क लिया जाता है। शुक्रवार को यह शुल्क दुगुना हो जाता है।

राष्ट्रीय पुस्तकालय

मैदान के दक्षिण-पश्चिम में 'बेलवेडियर' है। पहले यह वायसराय का अस्थायी निवासस्थान था। अब यहाँ राष्ट्रीय पुस्तकालय है। १९५३ में इसकी स्वर्णजयन्ती मनाई गई थी। पुस्तकालय में एक सुन्दर वाचनालय है। इस पुस्तकालय में लगभग ८० लाख पुस्तकें हैं।

रेस कोर्स

इसी दिशा में 'रेस कोर्स'—घुड़दौड़ का मैदान—है। पूर्व के सर्वोत्तम घुड़दौड़ के मैदानों में से यह एक है। यह १८१९ में बनवाया गया था। 'रायल कलकत्ता टर्फ क्लब' की ओर से घुड़दौड़ हर साल साधारणतः नवम्बर और मार्च के बीच तथा जुलाई और सितम्बर के बीच होती है।

फोर्ट विलियम

विलियम तृतीय के नाम पर इस किले का नाम 'फोर्ट विलियम' रखा गया है। इसमे १०,००० सैनिक रह सकते है। इसके अन्दर इसका अपना गिर्जाघर, तैरने की जगह, सिनेमा, चाँदमारी की जगह, परेड का स्थान और फुटवाल खेलने के मैदान, वाक्सिग स्टेडियम, डाक-तारघर और वाजार हैं। इसका तोपखाना देखने योग्य है। इसके लिये किले के प्रधान अफसर से इजाजत लेना आवश्यक है। यहाँ से थोडी ही दूर पर फुटवाल खेलने के मैदान है जहाँ खेल देखने के लिये गर्मियो मे वडी भीड जमा होती है।

राजभवन

राजभवन का निर्माण १८०१ में हुआ था। २० लाख रुपये के व्यय मे इसे लार्ड वेलेजली ने वनवाया था। यह डर्वी शायर, इग्लैड के 'केड्लेस्टन हाल' के ढग पर बनाया गया है। इसमे एक राजसिहासन का कमरा है। इसका यह नाम इसलिए पडा कि इस कमरे में टीपू सुलतान का राजसिंहासन रखा हुआ है। इसमें कलापूर्ण वस्तुओ का सुन्दर सग्रह है। इसमें आने के लिये चार सुन्दर प्रवेशद्वार बने हुए है। इसके पास ही राज्यविवान सभा का भवन और हाईकोर्ट की इमारत है। यह इमारत १८७२ में "वाइप्रेस" टाउन हाल के ढग पर वनाई गई थी।

आचलिक पर्यटन कार्यालय

राजभवन के पूर्व मे १३, ओल्ड कोर्ट हाउस स्ट्रीट पर आचलिक पर्यटन कार्यालय है। यही पर रेलवे रिजर्वेशन आफिस—रेलगाडी में जगह सुरक्षित कराने का दफ्तर—है। पर्यटन कार्यालय आवश्यक जानकारी देने योग्य सव प्रकार की स।मग्री मे पूर्ण है। यहाँ पर्यटन, चुगी तथा रजिस्ट्रेशन सम्बन्धी सब आवश्यक सूचनाएँ मिलती है। यहाँ पर्यटक यदि चाहे तो विश्वसनीय पथ-प्रदर्शक भी पा सकता है। कलकत्ता

राजभवन कलकत्ता
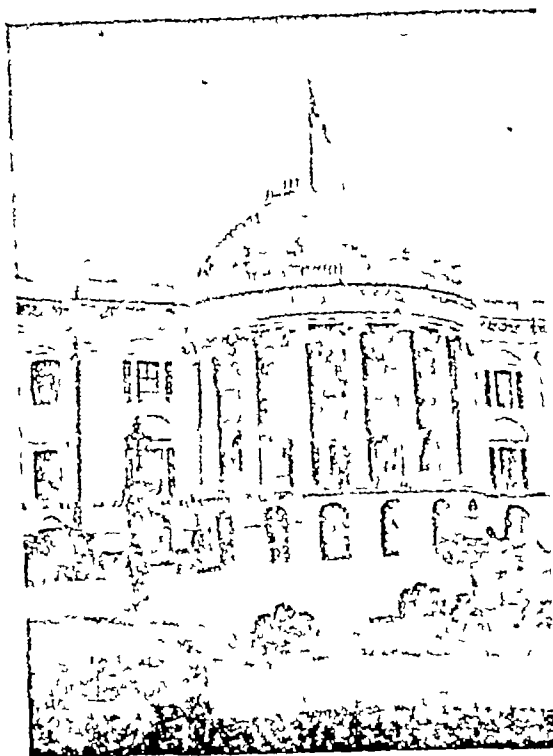
पहुचने पर यदि पर्यटक एक बार यहां हो ले, तो वह बहुत-सी असुविधाओं और कठिनाइयों से बच जाय।

डलहौजी स्क्वायर

गवर्नमेंट हाउस (अब राजभवन) से परे डलहौजी स्क्वायर का इलाका है। कारोबार और व्यवसाय की दृष्टि से कलकत्ता का यह सबसे बड़ा केन्द्र है। कोई ऐसा बड़ा बैंक नहीं जिसकी यहां शाखा न हो। कोई ऐसा व्यापारिक उद्यम नहीं, जिसका शहर के इस भाग में दफ्तर न हो। इसके मध्य में अवस्थित तालाब ने इसको मानवीय रूप दे दिया है जो शायद और किसी तरह सम्भव न होता। इसे

पानी में न केवल 'राइटर्स विल्डिग' की प्रतिछाया दिखाई देती है, वल्कि सेंट्रल टेलीफोन एक्सचेंज की भी प्रतिछाया दिखाई देती है। राइटर्स विल्डिग उत्तर में है जिसमें पश्चिम वगाल सरकार के दफ्तर है। सेट्रल टेलीफोन एक्सचेज दक्षिण मे है। पश्चिम मे जनरल पोस्ट आफिस और कुछ व्यवसायो की इमारतें है। राइटर्स विल्डिग से परे 'कलकत्ता स्टाक एक्सचेज' का कार्यालय है।

काम-काज के घटो में यहाँ वहुत शोर होता है। इस शोरशरावे में यह कौन सोचता है कि कभी इस इलाके में नवाव लोग रहते थे। आज जहाँ वगाल चेम्वर्स आफ कामर्स का जिसने १९५३ में अपनी शताव्दी मनाई, दफ्तर है। वहाँ क्लाइव रहता था। यही क्यो, आज इस वात की कौन फिक्र करेगा कि इस सडक के परले पार एक थियेटर था, जहाँ हेस्टिंग्स का शाही दरवार लगता था।

नाखुदा मस्जिद

उत्तर की ओर और आगे वढने पर शोर और अधिक वढता जाता है क्योकि यहाँ फुटकर सौदागिरी अधिक होती है। तग चितपुर रोड पर यदि आगे वढा जाय, तो कुछ दूर जाने पर नाखुदा मस्जिद आती है। कलकत्ता के मुसलमानो का यह वहुत पुराना पूजा-स्थान है। इस राह मे धीमी चाल से चलती हुई ट्रामवे, वैलगाडियाँ और विश्राम करते हुए साड दीखते है जो राह पर चलते हुए राही को चुनौती देते हुए प्रतीत होते हैं। नाखुदा मस्जिद के प्रार्थना-भवन में १०,००० लोग एक साथ वैठ सकते है। यह इमारत वडी शानदार और भारत-सारसेनिक शिल्प का एक आवुनिक नमूना है। इसकी गुम्वज भव्य और शानदार है और इसकी दो मीनारें १५१ फुट ऊँची हैं। पर्यटक को यहाँ अदन और पोर्ट सय्यद के जैसे वाजार दिखाई देते है। इस सडक के उत्तरी छोर पर वह घर आज भी मौजद है, जहाँ कवीन्द्र रवीन्द्रनाथ ठाकुर का जन्म हुआ था।

कलकत्ता विश्वविद्यालय

कलकत्ता को और अधिक नजदीक से देखने के लिए पर्यटक को कुछ पूर्व की ओर जाना चाहिए। चौरंगी के साथ शहर के इस भाग को मिलाने वाली सड़क अनेक नामों से पुकारी जाती है। इस सड़क का उत्तरी छोर का भाग कार्नवालिस स्ट्रीट के नाम से प्रसिद्ध है। मध्य भाग को कालेज स्ट्रीट और मध्य के निकटस्थ भाग को विलिंगडन स्ट्रीट कहते हैं। यहाँ भी पहले मध्य में अर्थात् कालेज स्ट्रीट में चलना ठीक रहेगा क्योंकि कालेज स्क्वायर के सामने ही कलकत्ता विश्वविद्यालय है। इसका सीनेट हाउस बड़े-बड़े खम्भों के सहारे खड़ा है। यह १२० फुट X ६० फुट का एक बड़ा हाल है जहाँ उपाधियाँ देने के लिये दीक्षांत समारोह होते हैं। इसके दालान के ऊपर की खुली छत छः ऊँचे-ऊँचे खम्भों पर टिकी हुई है। दालान में कानून के प्राध्यापक पद के प्रवर्तक श्री प्रसन्न कुमार ठाकुर की संगमरमर की प्रतिमा बनी हुई है। इसके साथ ही सटा हुआ लॉ कालेज, विश्वविद्यालय का पुस्तकालय और कला का अजायबघर है। विश्वविद्यालय से आगे उत्तर में प्रेसीडेंसी कालेज है जो वास्तुकला और शिल्प की दृष्टि से ही नहीं, वरन् ऐतिहासिक दृष्टि से बहुत महत्त्वपूर्ण है। यही वह स्थान है, जहाँ देश भर में सबसे पहले अंग्रेजी की शिक्षा का आरम्भ हुआ था। इसकी नई इमारत की आधारशिला सर जार्ज कैम्पबेल ने १८७२ में रखी थी।

पश्चिम के सम्पर्क का जो परिणाम हुआ, उसको १९वीं शती का पुनर्जागरण कहा जाता है। एक नवीन संस्कृति का जन्म हुआ जिसने बहुत कुछ विदेशों से ग्रहण किया और साथ ही देश की उन सफलताओं को पुनः जीवन-दान दिया, जो लुप्तप्राय हो गयी थीं। एक अर्थ में यह कहा जा सकता है कि भारत ने अपनी आत्मा को पुनः ढूंढ लिया और विद्वान् वर्ग ने अपने अतीत के गौरव के पुनर्निर्माण का काम आरम्भ किया।

कालेज स्क्वायर के पूर्व में 'महाबोधि सोसाइटी' की कलकत्ता शाखा
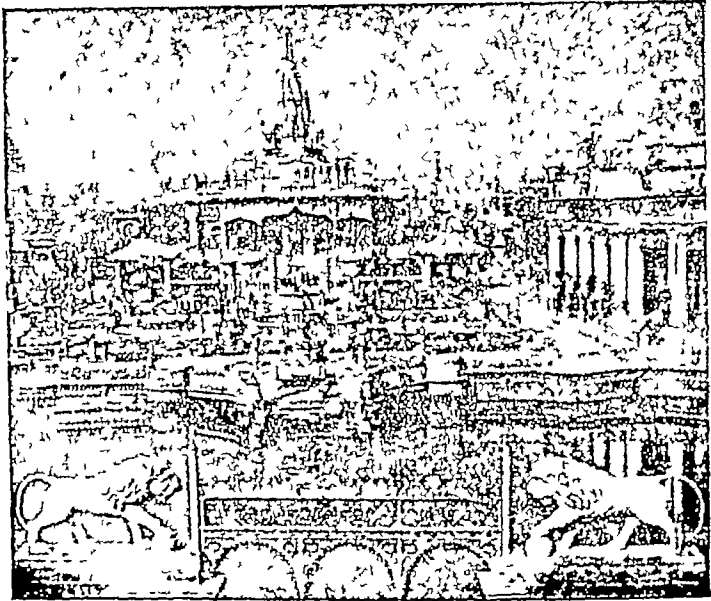
जैन मदिर, कलकत्ता

का हाल है। 'महाबोधि मोसाइटी' एक विश्व-सगठन है और इसका उद्देश्य बौद्ध सस्कृति का प्रचार करना है। दक्षिण-पश्चिम में लगभग एक मील दूर प्रसिद्ध 'मारबल पैलेस' है। यह १२ एकड से अधिक भमि में है। इसमे अनेक मुन्दर और कलापर्ण उद्यान है। जगह-जगह प्रतिमाएँ बनी हुई है। इसमे कई एक पक्षीशालाएँ भी है। यह 'पैलेम' वस्तुत कला का एक अनमोल खजाना है। इसमे रूबेन, सर जोशआ रेनाल्ड और अन्य प्रसिद्ध चित्रकारो के चित्र सुरक्षित है।

शहर की पूर्वी मीमा पर मियालदा स्टेशन है। यह ईस्टर्न रेलवे का टर्मिनस है। यह लोअर सर्क्युलर रोड पर है जिसके नाम से ही स्पष्ट है कि यह सडक शहर के एक बडे भाग को उत्तर से दक्षिण

तक घेरे हुए है। यह सड़क मोटे तौर पर मराठा खाई के साथ-साथ चलती है जिसका निर्माण ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने १७वी शती मे उस समय किया था जब कलकत्ता शहर पर मराठो के हमले होने का भय हर क्षण बना रहता था। पर जब बगाल के नवाब और मराठो के बीच सन्धि हो गई, तब इस खाई का बनाना रोक दिया गया। अपर सर्क्युलर रोड पर उत्तर मे यूनिवर्सिटी साइंस कालेज है जिसमे अन्य वैज्ञानिको के अतिरिक्त एक समय भारत के महान वैज्ञानिक श्री सी० वी० रमन भी अपनी सेवाएँ अर्पित कर चुके है। इससे और उत्तर मे बोस रिसर्च इंस्टिट्यूट है। यही पर प्रसिद्ध वैज्ञानिक डा० जगदीशचन्द्र बोस ने अपनी वैज्ञानिक खोजे की थी। इससे कुछ पश्चिम मे बद्रीदास टेम्पेल स्ट्रीट मे प्रसिद्ध जैन मन्दिर है। यह मन्दिर कला और शिल्प की दृष्टि से अद्वितीय है। इसकी रग-बिरगी पच्चीकारी का काम देखते ही बनता है। इस मन्दिर का निर्माण १८६७ मे हुआ था। इसके चारो ओर का बाग कलकत्ता के सुन्दरतम बागो मे से एक है।

दक्षिण की ओर यदि फिर जायें और पार्क स्ट्रीट के पूर्वी छोर पर पहुंचे तो वहाँ कलकत्ता का एक और ही रूप दिखाई देगा। यहा एग्लो-इण्डियनो और मुसलमानो का बाहुल्य है यद्यपि यह इलाका शेष शहर से कुछ अलग है। इस स्थान के लोगो की उदारता, उनका विस्तृत दृष्टिकोण और उनकी व्यापक मानवता की भावना उस समय स्पष्ट रूप से दिखाई पडती है, जब ये एक दूसरे के धार्मिक उत्सवो, पर्वो और समारोहो मे भाई-भाई के समान भाग लेते है।

'पार्क सरकस' में दो प्रसिद्ध श्मशान है। यहाँ जिन लोगो को दफनाया गया है, उनमे लैटर्स रोज एलीमर और कवि माइकेल मधुसूदन दत्त भी है। इन कब्रिस्तान की शान्ति पश्चिम के ओर के इलाके पर भी व्याप्त है जहाँ यूरोपीयो के मकान बने हुए है।

'पार्क स्ट्रीट' और 'लोअर सर्क्युलर रोड' के बीच के इलाके मे बहुत से घर और मकान जार्जियन शैली के अनुसार ईस्ट इंडिया

कम्पनी के जमाने के बने हुए है। इनमे से मिडिलटन रोड पर बना हुआ गिर्जाघर पुराना है। शहर का यह भाग बडा आनन्ददायक है। 'कैमेक स्ट्रीट' और इसके साथ की सडको पर छायादार वृक्ष लगे हुए] है। अप्रैल से सितम्बर तक इन पेडो मे फूल खिले रहते है। उस समय इनकी शोभा और सुपमा अवर्णनीय होती है।

सेंटपाल का गिर्जा

चौरगी की ओर फिर से लौटते समय दक्षिण दिशा की ओर देखते हुए दायी ओर के मैदान की सुन्दरता किसी को भी आकर्पित किये विना नही रहेगी। मैदान के दक्षिण-पूर्वी छोर पर 'सेंटपाल गिर्जा' है। यह १८४७ में खुला। यह २४० फुट लम्बा और ८० फुट चौडा है। इसके विस्तृत आँगन में लगी हुई अनेक तख्तियाँ ब्रिटिश भारत के इतिहास के एक महत्वपूर्ण अध्याय का स्मरण दिलाती है। एक तख्ती पर ६८वी वगाल रेजीमेण्ट के सात अफसरो के नाम लिखे है जो "देशी सेना के गदर और इसके वाद १८५७ मे १८५९ तक हुई मुठभेडो में मारे गये थे।" इनमें विलियम मेकपीस थैकरे के चचेरे भाई की भी एक तख्ती है। इस तख्ती का लेख विक्टोरिया काल के प्रसिद्ध उपन्यासकार द्वारा ही लिखा हुआ है।

अजायवघर

वाँई ओर की इमारत में 'वगाल क्लव' है। यह कभी मैकाले का निवासस्थान था। कलकत्ता के इस भाग का केन्द्रस्थल सम्भवत भारतीय अजायवघर है जो पार्क स्ट्रीट के उत्तर में है। शिल्प और कला की दृष्टि से तो यह नगण्य है किन्तु इसके भीतर वहुत सी मनोरजक, दिलचस्प और दर्शनीय वस्तुएँ हैं। इसकी गैलरी में भारतीय इतिहास के विविध रूप चित्रित है। इसमें जहाँ प्राग्-ऐतिहासिक काल का हाथी है, वहाँ वौद्ध अशोक और हिन्दू समुद्रगुप्त की भी मूर्तियाँ है। इस अजायवघर मे सर्दियो के मौसम में अनेक प्रदर्शनियाँ

हुई है। इनमें से एक प्रदर्शनी "एकेडेमी आफ फाईन आर्ट्स" की ओर से भी हुई थी।

कालीघाट

दक्षिण की ओर आगे बढने पर कलकत्ता शहर की आबादी का एक-छठा भाग और आ जाता है। इसी भाग मे भवानीपुर और कालीघाट भी है। कालीघाट का मन्दिर कितना पुराना है, यह बताना कठिन है, किन्तु इसको जितना प्राचीन और पुराना बताया जाता है, उतना शायद यह नही है। इसमे उन भक्तो की भक्ति में कोई अन्तर नही आता जो वहाँ रोज प्रात और साय हजारो की सख्या मे जाते है। विशेष अवसरो पर तो लाखो की सख्या मे लोग यहाँ एकत्र होते है।

इससे और दक्षिण में 'केवडातला घाट' है। यह हिन्दुओ का श्मशान स्थल है। यहाँ हिन्दू अपने मृतको को विधिपूर्वक जलाते है।

बालीगज

पश्चिम की ओर बालीगज है। यह बस्ती हाल ही मे बसी है। यहाँ उच्च मध्यम वर्ग के बगाली समाज की प्रधानता और बहुलता है।

शहर का यह भाग उत्तरी छोर पर बसी बस्ती के मुकाबले कम घना बसा हुआ है। इस इलाके मे विस्तार के लिये भी गुजाइश है। पूर्वी पाकिस्तान से आये शरणार्थी भी दक्षिणी भाग मे बसे है और इस कारण इस इलाके का अब विकास हो रहा है।

सिरेमिक रिसर्च इस्टिट्यूट

टालीगज में पिछले पाँच सालो मे शरणार्थियो की बहुत-सी बस्तियाँ बस गई है। यही 'रेस कोर्स' (घुडदौड का मैदान) और 'गोफ क्लब' है। जादवपुर मे बेढगे मकानो के बीच 'नेशनल सिरेमिक रिसर्च इस्टिट्यूट" की अकेली शानदार इमारत है। अब तक बेकार पडी जमीन पर शरणार्थियो ने छोटा सा कस्बा बना लिया है। उसको देखने के लिये जाना विस्थापितो के अदम्य साहस के प्रति श्रद्धाजलि अर्पित करना है। उन्होने प्रतिकूल परिस्थितियो मे भी हिम्मत नही छोडी, यह उनके लिये कम गौरव की बात नही है।

चिड़ियाघर

कलकत्ता का एक भाग और है जो अलीपुर और खिदिरपुर के नाम से प्रसिद्ध है। अलीपुर मे "जूआलौजिकल गार्डन" (प्राणी विज्ञान सम्बन्धी उद्यान) है। यहाँ चिडियाघर भी है। वनस्पति विज्ञान मम्वन्धी उद्यान भी यही है। इसमे ग्रीष्मप्रधान देशो के जैसे दुर्लभ पेड-पौधे है, जो अन्यत्र मिलने सम्भव नही। 'जुआलौजिकल गार्डन' की ओर ही अन्तरिक्षविज्ञान विभाग की 'अलीपुर वेधशाला' भी है।

जैसा कि पहले ही वताया जा चुका है बेलवेडियर के, जहाँ आजकल राष्ट्रीय पुस्तकालय है, प्रवेश द्वार के पश्चिम में वह स्थान है, जहाँ वारन हैस्टिंग्स और फिलिप फ्रासिस (पुस्तक-प्रेमियो के लिये 'जूनियस') के वीच १७८० मे द्वन्द-युद्ध हुआ था और उसमे फिलिप फ्रासिस जख्मी हुआ था। 'रेसकोर्स' के दक्षिण-पश्चिम में टाली के नाले के ऊपर एक पुल वना हुआ है। इस पुल पर से होकर वाटगज जाया जा सकता है। इसका यह नाम कर्नल हेनरी वाट्सन के नाम पर पडा है। यह हैस्टिंग्स के साथ द्वन्द-युद्ध करने वाले फ्रासिस का सहायक था। इसने ही १७८० में यहाँ गोदियाँ स्थापित की। वाद में इनको कर्नल किड के दो लडको ने खरीद लिया जिन्होने साथ के 'डाकयार्ड' और खिदिरपुर को अपना ही नाम दिया।

हुगली का नदी-तट

यहाँ पहुँच कर हुगली नदी के किनारे-किनारे घूमना या मोटर में सैर करना कम मनोरजक न होगा। 'गार्डन रीच', और 'नेपियर रोड' या 'न्यू स्ट्राड रोड' की राह से, जो पोर्ट ट्रस्ट रेलवे के समानान्तर है, यहाँ पहुँचा जा सकता है। नदी के तट पर अनेक घाट वने हुए है। नदी की ओर से ठण्डी-ठण्डी हवा आ रही होती है। चौडी सडक के दोनो ओर वृक्षो की पाँति लगी हुई है। वृक्षो की छाया के वीच होते हुए हुगली की लहरो को छूकर आयी हुई ठण्डी हवा जव शरीर को स्पर्श करती है, तव हृदय पुलकित और उल्लसित हो जाता है। सामने नदी में किश्तियाँ, नौकाएँ, वजरे, छोटे स्टीम लाच, और आधुनिक वडे-

हावड़ा का पुल
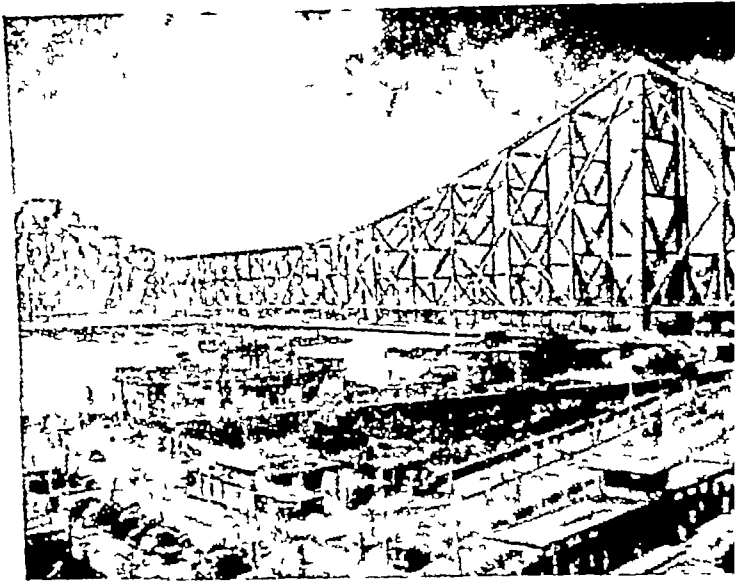
बडे पोत पास-पास खडे जल की तरगो पर थिरक रहे होते हैं। यदि बांयी ओर नजर उठाकर कोई देखे तो उसको मालूम होगा कि प्रकृति ने भूमि काट-काट कर और नदी-प्रवाह के साथ आई रेत और मिट्टी ने कितना नुकसान पहुँचाया है और इसके मुकाबले जब वह दायी ओर देखेगा तो मालूम होगा कि प्रकृति से युद्ध करके उस पर विजय पाकर मानव क्या करने मे समर्थ हुआ है। इसमे उत्तर की ओर जाने पर दूर बनी शानदार इमारतो और भवनो का मनोहारी दृश्य दिखाई देता है। ये भवन वे ही हैं जिनका हम पीछे वर्णन कर आये हैं। सारी राह मे यात्री को पग-पग पर यह अनुभव होगा कि कलकत्ता का बन्दरगाह कितना बड़ा है, यहाँ हर क्षण कितना अधिक काम होता है और यहाँ लोग कितने अधिक व्यस्त रहते हैं।

शाम के समय हुगली का दृश्य बडा मनोहर होता है। नदी के दोनो ओर सैकडो जूट मिलें हैं। देखने मे यद्यपि ये सुन्दर नही लगती

पर लाभदायक अवश्य है। भिन्न-भिन्न आकार की नावो से जूट की गाँठो का उतारा जाना वडा आकर्पक होता है। जूट उद्योग देश का एक वडा उद्योग है और डालर-अर्जन का यह सबसे वडा स्रोत है। लगभग सारा जूट देश के उत्तरपूर्वी भाग में पैदा होता है। जूट उद्योग अव पुरानी मशीनो और पुराने सयत्रो की जगह नये सयत्र लगाने का विचार कर रहा है। कलकत्ता बन्दरगाह से निर्यात होने वाली अन्य चीजें है—चाय, कोयला, लाख और मैंग्नीज।

वोटेनिकल गार्डन

हावडा के रेलवे-स्टेशन का जिक्र पहले ही किया जा चुका है। यहाँ से कुछ दर्शनीय स्थान नजदीक है। अत यहाँ से वहाँ जाना अच्छा है। वोटेनिकल गार्डन्स (वनस्पति शास्त्र सवधी उद्यान) की स्थापना १७८६ में शिवपुर में की गई थी। यह हावडा से २$\frac{1}{2}$ मील दूर है। वनस्पति शास्त्री यहाँ पहुँच कर निस्सदेह सबसे पहले 'हरवेरियम

वोटेनिकल वाग में वरगद का पेड

(जटी-बूटी सग्रहालय) जाना पसन्द करेंगे। यहाँ पर चालीस हजार किस्म की सूखी जडी-बूटियाँ रखी हुई हैं। इस बाग के सुपरिन्टेन्डेन्ट के निवास-गृह के पास ही 'बोटेनिकल लाइब्रेरी (वनस्पति-शास्त्र सबधी पुस्त-कालय) है। वनस्पति शास्त्र के विद्वानो के लिए यह पुस्तकालय बडा उपयोगी है। परन्तु साधारण यात्री सीधा बरगद के पेड के नीचे पहुँचता है। यह पेड असाधारण रूप से विशाल और ऊँचा है। इसकी परिधि १,००० फुट से ऊपर है और यह ८८ फुट से अधिक ऊँचा है। १९२५ में इसका बीच का तना निकाल दिया गया था। इसका उद्देश्य शेष भाग को बचाना था। बाग बडा उत्तम है। यहाँ लोग वन-भोज, विहार और आमोद-प्रमोद के लिए बडी सख्या मे प्रतिदिन आते है। एक बार जो यहाँ आ जाता है, वह इसको जीवन भर भूलता नही।

बेलूर

रामकृष्ण मिशन की स्थापना बेलूर मे हुई थी। यह स्थान पश्चिम के लोगो को भी भली भाँति ज्ञात है। यह हावडा से केवल ४ मील दूर उत्तर मे है। यहाँ एक बडा सुन्दर मदिर है। इसके बाहरी रूप ने बहुत से यात्रियो को मुग्ध कर दिया है।

श्रीरामपुर और चन्दननगर

थोडा और उत्तर की ओर आगे बढने पर श्रीरामपुर और चन्दननगर आते हैं। श्रीरामपुर दो बैपटिस्ट मिशनरियो—कैरी और मार्शमैन—का कार्यक्षेत्र रहा है। भारत के इस भाग में पश्चिमी शिक्षा और बाईबिल का प्रचार करने मे इन दोनो ने बहुत काम किया था। चन्दननगर कुछ दिन पहले तक फ्रासीसी बस्ती थी। इसके समीप ही चुचूडा, हुगली और बन्डेल है जहाँ कभी डेनिश, डच, फ्रासीसी और अग्रेज लोग लगभग समान शर्तों पर व्यापार किया करते थे। बाद मे अग्रेज अकेले रह गये। परन्तु हुगली मे डचो द्वारा बनाई गई इमारतें और बन्डेल में पुर्तगाली गिर्जा (१५९९ मे बना) आज भी

पर लाभदायक अवश्य है। भिन्न-भिन्न आकार की नावो से जूट की गाँठो का उतारा जाना बडा आकर्षक होता है। जूट उद्योग देश का एक बडा उद्योग है और डालर-अर्जन का यह सबसे बडा स्रोत है। लगभग सारा जूट देश के उत्तरपूर्वी भाग मे पैदा होता है। जूट उद्योग अब पुरानी मशीनो और पुराने सयत्रो की जगह नये सयत्र लगाने का विचार कर रहा है। कलकत्ता बन्दरगाह से निर्यात होने वाली अन्य चीजें हैं—चाय, कोयला, लाख और मैग्नीज।

बोटेनिकल गार्डन

हावडा के रेलवे-स्टेशन का जिक्र पहले ही किया जा चुका है। यहाँ से कुछ दर्शनीय स्थान नजदीक है। अत यहाँ से वहाँ जाना अच्छा है। बोटेनिकल गार्डन्स (वनस्पति शास्त्र सबधी उद्यान) की स्थापना १७८६ में शिवपुर में की गई थी। यह हावडा से २½ मील दूर है। वनस्पति शास्त्री यहाँ पहुँच कर निस्सदेह सबसे पहले 'हरबेरियम

बोटेनिकल बाग में बरगद का पेड

शान्तिनिकेतन

यह कलकत्ता से उत्तर-पश्चिम में लगभग १०० मील दूर है। कलकत्ता से बोलपुर—शान्तिनिकेतन के सबसे पास का स्टेशन—रेल द्वारा पहुँचने में चार घण्टे लगते हैं।

यहाँ पर कवीन्द्र रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने अन्तर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय 'विश्व भारती' की स्थापना की थी। इसके पास ही महाकवि के पिता द्वारा स्थापित आश्रम है। विश्वविद्यालय का संचालन-भार अब केंद्रीय सरकार ने अपने ऊपर ले लिया है। किन्तु महाकवि का महान

दक्षिणेश्वर मन्दिर

वेलूर मदिर

मौजूद है और उसकी याद दिलाते है, जिसको टायनवी शायद 'रुद्ध साम्राज्यवाद' कहना पसन्द करे।

इमामवाडा और विष्णु-मदिर

हुगली स्थित इमामवाडा बहुत प्रभावशाली और सुन्दर मुस्लिम मकबरा है। वगाल के पच्चीकारी के काम मे यह एक सुन्दर वृद्धि है। वगाल के विविधमुखी जीवन को विभिन्न प्रकार के लोगो की सस्कृतियो और धर्मो ने वनाया है। उनमे इस इमामवाडे का भी एक स्थान है। हुगली मे वांसवेडिया मे ही विष्णु-मदिर है जो १६७९ का वना हुआ है। वगाल में हिन्दू शिल्प कला के जो थोडे-से उदाहरण वचे हुए है, उनमे से यह एक है।

शान्तिनिकेतन

यह कलकत्ता से उत्तर-पश्चिम में लगभग १०० मील दूर है। कलकत्ता से बोलपुर—शान्तिनिकेतन के सबसे पास का स्टेशन—रेल द्वारा पहुँचने में चार घण्टे लगते हैं।

यहाँ पर कवीन्द्र रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने अन्तर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय 'विश्व भारती' की स्थापना की थी। इसके पास ही महाकवि के पिता द्वारा स्थापित आश्रम है। विश्वविद्यालय का संचालन-भार अब केंद्रीय सरकार ने अपने ऊपर ले लिया है। किन्तु महाकवि का महान

दक्षिणेश्वर मन्दिर

व्यक्तित्व यहाँ आज भी सर्वत्र व्याप्त है। आश्रम की परम्पराएँ पहले के समान आज भी कायम है। अन्य देशो की शिक्षा-प्रणालियो में जो अच्छी वाते हैं, उनको भी अपना लिया गया है। इसका अन्तर्राष्ट्रीय रूप विश्व-विद्यालय के केवल अध्यापको और छात्रो में ही नही दिखाई देता, वल्कि यह 'चीन भवन' सदृश इमारतो मे भी दृष्टिगोचर होता है। यहाँ देश-विदेश के छात्र और अध्यापक अव्ययन-अध्यापन और पठन-पाठन का काम करते है। महाकवि जिन तीन चार मकानो में रहते थे, वे अब भी यहाँ है। पढाई खुले आकाश के नीचे और नैसर्गिक सुषमा के मध्य होती है।

महाकवि के जीवन का प्रधान लक्ष्य था मानव-मानव के मध्य और मानव तथा प्रकृति के बीच एकरूपता स्थापित करना और यही शान्तिनिकेतन के कण-कण में व्याप्त है। यद्यपि यहाँ के विद्यार्थी भी दूसरो के समान परीक्षाएँ पास करते है, किन्तु यहाँ सगीत, नृत्य और चित्रकारी सदृश कलाओ पर ज्यादा जोर दिया जाता है। इसके पीछे भावना है छात्रो को इस वात के लिए अनुप्रेरित करने की कि वे सौन्दर्य को पहिचानें और उसको हृदयगम करें और उनमें अदृश्य के प्रति जिज्ञासा तथा उसको जानने के लिए उनके मन में व्यग्रता और आकुलता उत्पन्न हो।

निरीक्षक की तेज आँखो से यह वचा न रहेगा कि यह विश्वविद्यालय अनेक वातो में अनुपम है। शान्तिनिकेतन में जो एक-रूपता और सामञ्जस्य दिखाई देता है, उसके लिए केवल समन्वय की सज्ञा देना ही पर्याप्त नही है। कलकत्ते के चारो ओर जो असमानता और वेढगापन दिखाई देता है, उम पर यदि यहाँ शान्त चित्त मे विचार किया जाय तो उमका अर्थ स्पष्ट हो जायगा।

'यत्र विश्व भवत्येकनीडम्'—'जहाँ मसार एक घोसले के समान हो जाता है'—इस विश्वविद्यालय का 'मिद्धान्त' है। यह सस्था अपने मिद्धान्त के अनुरूप चल रही है।
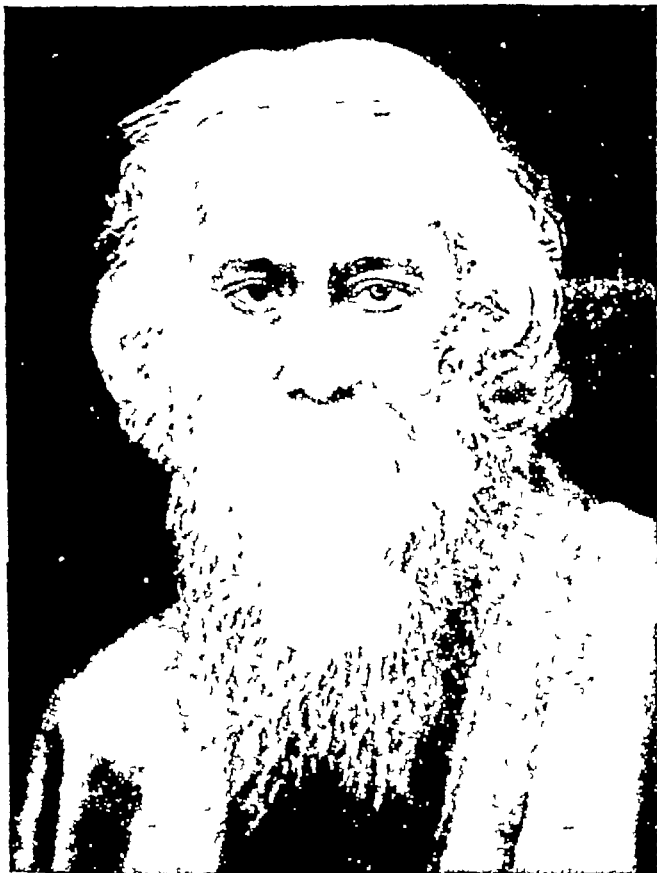
रवीन्द्रनाथ ठाकुर

सन्याल

महाकवि आदर्शवादी होने के साथ-साथ व्यावहारिक भी थे। शान्ति-निकेतन के पास ही 'श्रीनिकेतन' है। यहां गांव वाले सैकड़ों की संख्या में कुटीर उद्योगों में लगे हुए हैं। श्रीनिकेतन में बनाई और तैयार की गई चीजें सुन्दर होती हैं और यहां की याद को सदा ताजा बनाये रखने में समर्थ हैं। इनका दाम भी अधिक नहीं होता। उचित कीमत पर

शान्तिनिकेतन के श्रीनिकेतन में तैयार की गई कुटीर-उद्योग की वस्तुएँ

ये शान्तिनिकेतन और कलकत्ता मे खरीदी जा सकती है। श्रीनिकेतन मे काम करने वाले लोग दर्शक का ध्यान वरवस अपनी ओर खीचते है। यह तो स्पष्ट है कि ये वगाली नही है। इनका रग काला है, ये अधिक परिश्रमी है, इनकी आंखे चमकीली और काली है और ये लोग एक खास अदा और मस्ती के साथ चलते है। ये मन्थाल है। भारत के आदिवामी जातियो मे से यह एक जाति है। ये भारत के अनेक भागो मे पाये जाते है। जहाँ ये लोग रहते है, उसके आस-पाम के वातावरण के अनुरूप ही इनकी प्रकृति होती है। शान्तिनिकेतन के पास जो मन्थाल रहते है, उनमें कुछ मिलावट आ गई है और वे कुछ शहरी हो गए है। किन्तु इम विपमता मे भिन्न उनका सामुदायिक जीवन ममृद्ध है। इन पर नई सभ्यता का कोई प्रभाव नही पडा और ये पहले के ममान प्रसन्न और पवित्र है। सथालो के जीवन का चित्रण करने के लिए 'गोर्गां' की और उमके वारे मे लिखने के लिए 'लोति' की जरूरत है।

यात्री ध्यान मे देखे तो उमको यह अनुभव होगा कि नीचे की

धरती की बनावट और उसका रग बदल गया है। मिट्टी मुलायम नही रही है और उसका रग जली धरती का-सा है। उसकी आर्द्रता घट गई है और बगाल के इस भाग मे धरती के गर्भ मे लोहा और कोयले के रूप मे अपार सम्पत्ति भरी पडी है। रानीगज और बराकर के चारो ओर और लगभग बिहार की सीमा तक कोयले की समृद्ध खाने है।

आसनसोल

आसनसोल मे लोहा व इस्पात का आधुनिक कारखाना है। इस कारखाने के चारो ओर एक सुआयोजित शहर बस गया है। औद्योगिक सौन्दर्य आज के युग की एक विशेषता है और वह यहाँ देखी जा सकती है। इस्पात सयत्र के विस्तार की योजना विचाराधीन है। नूतन भारत के जीवन का यह एक नया रूप और पहलू है। अतीत काल मे खेती और उद्योग के बीच कोई सन्तुलन नही था, परन्तु आज

शान्तिनिकेतन में प्रकृति के स्वतत्र वातावरण में छात्रों को पढाया जा रहा है

का भारत इन दोनो के मध्य सन्तुलन स्थापित करने का प्रयत्न कर रहा है। भारत की अर्थ व्यवस्था सतुलित होगी। सूरी के निकट मयूराक्षी परिकल्पना पूरी होने वाली है। यह यहाँ से नजदीक ही है। दामोदर घाटी निगम एक दूसरा महान साहस है। इसका निर्माण 'टेनैसी वैली अथारिटी' के नमूने पर किया गया है जिसके फलस्वरूप उत्पाती और विनाशक नदी को नियन्त्रित करके उसे मानव की सेवा में लगाया जा रहा है।

मुर्शिदाबाद

ब्रिटिश भारत का प्रारम्भिक इतिहास कलकत्ते के चारो ओर केंद्रित था पर इससे पहले का इतिहास कलकत्ते से उत्तर में १२२ मील दूर मुर्शिदाबाद के भग्नावशेषो में निहित है। यहाँ नवाव के महल में एक शस्त्रागार है जो वस्तुत देखने के योग्य है। मुर्शिदाबाद के चारो ओर बिखरे ध्वसावशेषो को देखकर इस वात की आज कल्पना भी नही की जा सकती कि कभी यह शहर लन्दन के समान वडा और समृद्ध शहर था और यह क्लाइव को लन्दन से भी अधिक प्रिय था। परन्तु उस प्राचीन ऐश्वर्य और वैभव के साक्षीरूप 'मोती भील' और 'खुशवाग' आज भी यहाँ विद्यमान हैं। इन दोनो को देखकर उस समय के वैभव और ऐश्वर्य की कुछ कल्पना हो सकती है और ऐसा मालूम होता है कि सभवत केवल मुसलमान ही ऐश्वर्य को पैदा करना और उसको भोगना जानते है। मुर्शिदाबाद का रेशम का व्यापार आज भी फल-फूल रहा है और सारे भारत मे इस जिले का रेशम विकता है।

गौड

वख्तियार खिलजी ने लगभग १२०० ई० मे गौड को जीता और तभी से इस का इतिहास आरम्भ होता है। उसके उत्तराधिकारियो ने यहाँ तीन सौ से अधिक वर्षो तक राज्य किया। उस समय के भग्नावशेष आज भी दिखाई पडते हैं। यह शहर उत्तर से दक्षिण की ओर ७$\frac{१}{२}$ मील लम्बा और १ से २ मील चौडा है। इसके पश्चिम मे गगा वहती

दार्जिलिंग का एक दृश्य

है और पूर्व में यह 'महानन्द' द्वारा सुरक्षित है। यहां एक दर्शनीय चारदीवारी है जो इस समय खंडहर है। इसकी नींव लगभग १०० फुट चौड़ी है। बीते युग के चिह्न जगह-जगह दिखाई देते हैं। यहीं पर 'सागर दीघी' एक बहुत बड़ी झील है। यह १,६०० गज लम्बी और ८०० गज चौड़ी है। यह सम्भवतः १२वीं सदी के प्रारम्भ में खोदी गई थी। इसके किनारे मखदूम शेख आखी सिराजुद्दीन का मकबरा है। जगह-जगह टूटे-फूटे दरवाजे, बुर्जें ढहती दीवारें और गिरते दुर्ग

बिखरे पडे है। गौड के बिखरे ध्वसावशेषो को देखने के बाद यात्री यह अनुभव किये बगैर नही रह सकता कि यह शहर कभी बहुत भव्य, सुन्दर और रमणीक रहा होगा, अन्यथा इसके ध्वसावशेषो में जगह-जगह इतना ऐश्वर्य बिखरा हुआ दिखाई न देता।

दार्जिलिग और एवरेस्ट शिखर

गिरिराज हिमालय के चरणो मे समुद्रतल से ७,००० फुट ऊपर दार्जिलिंग वसा हुआ है। यह भारत का सुन्दरतम पर्वतीय स्थान है। कलकत्ता और बागडोगरा के मध्य नियमित रूप से हवाई सर्विस है और बागडोगरा से दार्जिलिग तक वसें और टैक्सियाँ बराबर आती-जाती रहती है। यहाँ से विश्व के सर्वोच्च पर्वत-शिखर दिखाई देते हैं। इनमे सर्वोच्च शिखर है—एवरेस्ट शिखर। यह २९,०२८ फट ऊँचा है जो दार्जिलिग से छ मील दूर और ८,६०० फुट ऊँची 'टाइगर हिल' से दिखाई देता है। दार्जिलिग से दिखाई देने वाला काचनजघा शिखर २८,१४६ फुट ऊँचा है।

हिमालय की मोहकता वर्णनातीत है। किसी भी भाषा के शब्द उसको प्रकट नही कर सकते। सभवत मैलोरी ने ही यह पूछे जाने पर कि तुम पहाड पर चढते हुए हमेशा हिमाच्छादित चोटियो की ओर ही क्यो देखते रहते हो, यह जवाब दिया था—'क्योकि वे वहाँ है।' अधिकाश पर्वतारोही अग्रेज अग्रेजी भाषा के अच्छे गद्यलेखक हुए हैं, पर वे इस बात मे सहमत होगे कि मैलोरी के सरल और सीधे-सादे उत्तर मे वे और कोई शब्द जोडने में असमर्थ है। हिमालय के चरणो मे पहुँच

जाना है और उस ममय जो अनुभूति होती है अथवा जो भाव और विचार आते है, उनके बारे मे कहा जा मकता है—'नशक्यते वर्णयितुं गिरा तदा स्वय तदन्त करणेन गृह्यते' अर्थात् वाणी उमका वर्णन करने मे अममर्थ है और केवल हृदय ही उसका अनुभव कर मकता है। पर्वतो को जव टिल्मैन 'शिलाओ और हिम के नैमर्गिक मदिर' के नाम मे मम्वोन्वित करता है, तव वह आत्मा की भापा मे वात कर रहा होता है, क्योकि मन्दिर ईट और गारे मे वने मकान का नाम नही है, वल्कि वह तो वह आत्मा है जिमका उममे वाम है। दार्जिलिग पुण्यभूमि है, क्योकि वहाँ महाकवि कालिदाम द्वारा वर्णित 'देवात्मा' हिमालय का वास है।

हिमालय की देवोपम शोभा मे यात्री की आँखे नही हटती और वह हिम-मण्डित और मूर्य-रश्मि रजित अनुपम मुपमा को तृपित नेत्रो मे देखता हुआ आत्म-विभोर हो जाता है। दार्जिलिग मे देखने योग्य कुछ वस्तुएँ और भी है जैसे आवजरवेटरी हिल, वेवोग रेम कोर्म, वोटेनिकल गार्डन, टेवर्च हिल पब्लिक पार्क और विक्टोरिया प्रपात। 'घूम मठ' पर फहराता हुआ झण्डा दूर मे दिखाई देता है और यह पुराना मठ समीप मे जाकर देखने योग्य है।

कुर्सियोग और कलिम्पोंग

दार्जिलिग मे रहने वाले पहाडी लोग नेपाल और मिक्किम के है। ये दोनो राज्य दार्जिलिग से मटे हुए है और पडोमी राज्य है। इनके अलावा यहाँ रहने वाले लेपचा और भूटिया है। जिले की आवादी २-½ लाख मे अधिक है। लगभग ९३,००० लोग नेपाली भापा वोलते है। अग्रेजी और हिन्दी यहाँ व्यापक रूप मे वोली और ममझी जाती है। यहाँ के मुख्य धर्म हिन्दू और वौद्ध धर्म है। यहाँ के लोगो का मुख्य पेशा खेती और चाय एव सिनकोना की वागवानी करना है। दार्जिलिग के नर-नारी आत्मसम्मानी, प्रसन्न मुख और निष्ठावान है और अपने ढग का जीवन व्यतीत करते है। अव ये शेप देश से अलग और एकाकी नही रहे है।

यह मानना होगा कि दार्जिलिंग का मुख्य आकर्षण हिमालय है। सिक्किम जाने और वहाँ पर्यटन और साहसिक यात्राओ के लिए अच्छा इन्तजाम है। वहाँ से शाश्वत हिममण्डित हिम-शृगो की शोभा का दृश्य बहुत अच्छा दिखाई देता है। यह दृश्य वहाँ अधिक नजदीक से दिखाई देता है। कुर्सियोग और कलिम्पोग दो छोटे शहर हैं। दोनो एक दूसरे से बढकर सुन्दर है। नेपाल, सिक्किम, भूटान और तिब्बत ये चारो किसी न किसी स्थान पर दार्जिलिंग को छूते हैं। इस कारण तिब्बत को छोड कर अन्य तीनो देशो में घोडे पर या पैदल जाया जा सकता है। किन्तु जाने से पहले सम्बन्धित अधिकारियो से इजाजत लेना आवश्यक है। दार्जिलिंग मे ऐसे क्लब और ऐसी एजेंसियाँ हैं जो अभियान की व्यवस्था करती हैं।

कूच-विहार

कूच-विहार के सुरक्षित जगल का दृश्य अत्यन्त रमणीक और सुन्दर है। यहाँ बहुत से लोग शिकार खेलने के लिए जाते हैं। यहाँ की दो आकर्षक वस्तुएँ हैं—शेर और हाथी। शिकार-पार्टियाँ इस काम में यात्रा-एजेंसियो से सहायता ले सकती हैं। आजकल ये एजेंसियाँ इस शाही खेल की ओर विशेष रूप से ध्यान देने लगी है।

यात्री के पास साधारणत समय थोडा होता है। वह कम से कम समय में अधिक से अधिक चीजें देख लेना चाहता है। इतने समय में जितना सभव था, उतना वगाल हमने देख लिया है। इस विविधता मे कोई एक ढाँचा और एक नमूना नही निकला क्योकि वगाल का इतिहास वरावर एक-जैसा नही रहा। सक्षेप में कहा जा सकता है कि यह राज्य जिसका एक अग हिमालय को छूता है, प्राकृतिक दृश्यो के सौन्दर्य की दृष्टि से किसी से
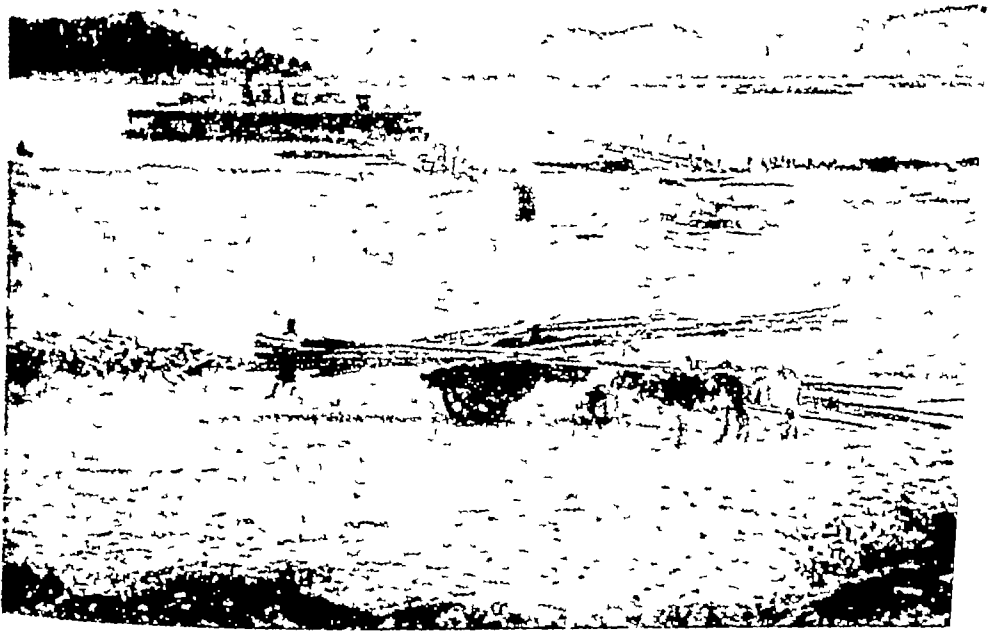
आसाम मे गोहाटी के समीप ब्रह्मपुत्र नदी

तत्वो में समन्वय स्थापित हुआ है। अत यहाँ सृजनात्मक विचारो की कमी नही है। भारत के अन्य भागो मे प्राचीन काल की वस्तुएँ बहुत काफी है पर बगाल मे ऐसा कुछ नही। इसके नगरो और गाँवो मे वे चीजे देखी, सुनी और अनुभव की जा सकती है जो वस्तुत देखने-सुनने और अनुभव करने योग्य है।

उत्सव और पर्व

हिन्दू लोग दुर्गा-पूजा (सितम्बर-अक्तूबर) मे बडी धूम-धाम से मनाते है। अधिकाश हिन्दू-घरो मे प्रति दिन किसी न किसी किस्म की पूजा होती रहती है पर बडे अवसरो पर दुर्गा-पूजा के अतिरिक्त काली पूजा

(उत्तरी भारत मे इसकी जगह दिवाली मनाई जाती है) होती है। इस मौके पर दीपको की पक्ति सजाई जाती है। छज्जो, कार्निस और देहली पर विशेप रूप से दिए सजाये जाते है। यहाँ सरस्वती पूजा भी मनाई जाती है। होली (फरवरी-मार्च) के पर्व पर जान-पहचान के और सह-धर्मी हिन्दुओ पर रग फेका जाता है। हाल ही मे सामुदायिक पूजा का रिवाज चला है और यह वरावर वढ रहा है। महीने के उपवास के वाद ईद के दिन हजारो मुसलमान पार्क सर्कस के इलाके मे जमा होते और नमाज पढते है। उस दिन वह स्थान रग-बिरगे कपडे पहने नर-नारियो के भारी जमाव के कारण वडा सुन्दर मालूम होता है।

आसाम

आसाम भारत की उत्तर-पूर्वी सीमा पर है। इसका क्षेत्रफल ८५,०१२ वर्ग मील है। इसमें मैदान, पहाडी जिले तथा उत्तर-पूर्व सीमा-एजेंसी शामिल है। इसकी आवादी ९०,४३,७०७ है। आसाम का लगभग दो तिहाई भाग पर्वतमय है। इस भाग में अनेक जनजातियाँ रहती हैं। इनके अपने खास रीति-रिवाज हैं और अपनी परम्पराएँ हैं।

पहाडो के अतिरिक्त आसाम का दूसरा आकर्पण जगल है। सरकार द्वारा सुरक्षित रखे जाने वाले जगल ६,००० वर्गमील से अधिक है। वन-सम्पत्ति की दृष्टि से आसाम वहुत समृद्ध है।

इस प्रदेश का मुख्य आकर्पण उत्पाती ब्रह्मपुत्र नदी है। शहर इसके वाँये तट पर वसा हुआ है। ब्रह्मपुत्र का अर्थ है ब्रह्मा का लडका। हिन्दुओ के तीन देवताओ मे ब्रह्मा मुख्य है। यह नदी वस्तुत मनुष्यो की महन शक्ति की परीक्षा लेती है। ब्रह्मपुत्र मे हर साल वाढे आती है और धन-जन की अपार क्षति होती है। इसके किनारे वसे शहरो का जीवन सकटमय हो जाता है। वरसात में यह नदी अगम्य हो जाती है। वरसात के मौमम मे इसका पानी सैकडो वर्गमील जमीन में फैल जाता है। नदी मे पानी की मतह इम काल मे साधारणत ३०–४० फुट अधिक ऊँची हो जाती है। इसमे होने वाली मिचाई के कारण जहाँ चावल,

जूट और राई-सरसों प्रचुर मात्रा में पैदा होती है, वहाँ जब यह भीषण और उग्र रूप धारण करती है, तब यह सब का विनाश भी कर देती है। भयंकर बाढ़ वृक्षों, पशुओं, खड़ी फसलों, मकानों और नर-नारियों को टूटी-फूटी चीजों के समान बहा ले जाती है और मानव को इस बात का स्मरण कराती है कि वह प्रकृति के समक्ष बहुत दुर्बल है और प्रकृति पर विजय पाने का उसका अभिमान वृथा है। पूर्वी भारत की सब नदियों में से ब्रह्मपुत्र ही यात्री को शक्तिमती नदी की विशालता, उसकी महानता और अपार शोभा का कुछ आभास कराती है। साल भर में यह जो कुछ देती है, वह यह एक दिन में ही छीन लेती है। गोहाटी के पास इसका रूप अपेक्षाकृत सौम्य है। ब्रह्मपुत्र नदी हिमालय के उत्तरी छोर के ग्लेशियरों (हिमशिलाओं) की शृंखला से निकलती है। यह १८०० मील लम्बी है। कभी-कभी इस क्रुद्ध नदी को इसके विनाश-कार्य में भूकम्प भी मदद देता है। गोहाटी का पूर्ण रूप से अनेक बार विनाश हो चुका है। १८९७ में गोहाटी में अत्यन्त भीषण और विनाशक भूकम्प आया। ऐसा भूकम्प उसके बाद से फिर कभी नहीं आया। पिछले कुछ वर्षों में भी यहाँ भूकम्प आये, पर वे साधारण थे।

इतिहास

यद्यपि इस पर मुसलमानों के अनेक बार हमले हुए पर आसाम मुगल साम्राज्य और भारतीय मुस्लिम शासन से अलग ही रहा। इससे पहले आसाम कामरूप के हिन्दू राजा के राज्य में सम्मिलित था। प्रागैतिहासिक काल में भी इसके राजाओं का उल्लेख मिलता है।

चीनी विद्वान हुएन सांग ६४० ई० में आसाम आया था। उसके ६०० साल बाद यहाँ अहोम लोग आये। आसाम के बारे में जानकारी पाने का एकमात्र आधार हुएन सांग का यात्रा-वृत्तान्त है। उस चीनी यात्री ने लिखा है—'कामरूप देश लगभग १०,००० ली (लगभग २,८०० मील) के घेरे में है। राजधानी ५ मील के दायरे में है। जमीन नीची पर उपजाऊ है और यहाँ नियमित रूप से खेती होती है। जलवायु

नम और समशीतोष्ण है। लोगो का कद नाटा है और उनका रग गाढा पीला है। भारत के मध्य भाग से इनकी भापा कुछ भिन्न है। ये क्रोधी और उग्र स्वभाव के होते है परन्तु इनकी स्मरण शक्ति अच्छी होती है। ये लोग अध्ययनशील हैं। वर्तमान राजा का नाम कुमार भास्कर वर्मन है। यह जाति से ब्राह्मण है। राजा विद्या-प्रेमी हैं। यहाँ के लोग भी विद्या-प्रेमी है। देश के दूर-दूर भागो से बडे-बडे विद्वान यहाँ आते है और उसके दरबार में नौकरी पाने के लिए प्रयत्न करते है। इस देश के दक्षिण-पूर्व में जगली हाथियो के झुण्ड के झुण्ड घूमते है। इस जिले में इनका उपयोग मुख्यत लडाई के लिए किया जाता है। १,२०० या १,३०० ली (लगभग २०० मील) दक्षिण जाने पर 'समताता' (पूर्वी वगाल) आ जाता है।"

कामरूप राज्य में उत्तरी वगाल का कुछ भाग और सारा आसाम शामिल था। इसके विपय में एक पुरानी कथा है। कामदेव ने भगवान शिव की तपस्या भग करनी चाही। भगवान शिव इससे नाराज हो गये और उन्होने अपना तीसरा नेत्र खोला और काम को जला दिया। वाद में शिव को मनाया और प्रसन्न किया गया। तव काम को अपना पहला रूप प्राप्त हुआ। यह घटना इस देश में घटी, अत इस देश का नाम 'काम रूप' पड गया। कामरूप का अर्थ सुन्दर भी है। आज कामरूप एक जिले का नाम है। सारा प्रदेश आसाम कहलाता है क्योकि इसकी जमीन ऊँची-नीची और विपम है। भास्कर वर्मन से पहले नरकामुर और भगदत्त के राजवशो ने इस देश पर वहुत दिनो तक राज्य किया। भगदत्त प्राग्ज्योतिप (आज का गोहाटी) का राजा था। भगदत्त महाभारत के युद्ध में भी लडा था। नरकासुर भगदत्त का पिता था। इसने ही गोहाटी और पाडू के वीच नीलाचल पर्वत पर 'कामाख्या देवी' का मन्दिर वनवाया था।

आसामियो को कामरूप के इतिहास का गर्व है। उनकी सभ्यता और सस्कृति अत्यन्त प्राचीन है।

पालवंशी राजाओ के रगमच पर आने से पहले राज्य का धर्म हिन्दू था। इसके बाद बौद्ध धर्म ने बहुत प्रगति की। आसाम-घाटी के लिए कई शतियो तक कोच, अहोम और चेटिया शक्तियो के बीच झगडा चलता रहा। अन्त में अहोम विजयी रहे। १३वी शती के प्रारभ मे बर्मा और चीनी सीमान्त से अहोम (शान) भारी सख्या मे पूर्वी जिलो मे आये। वहाँ उन्होने अपना राज्य कायम किया जो कई सदियो तक चला।

भारतीय इतिहास मे जो बहुधा होता रहा है, वही यहाँ भी हुआ। अहोम अपने रीति रिवाजो, अपने व्यवहारो, अपना धर्म और अपनी भाषा को काफी दिनो तक अलग कायम रखने मे सफल हुए और स्थानीय हिन्दू-निवासियो से पृथक् रहे। परन्तु यह स्थिति अधिक दिनो तक नही टिक सकी। इनसाइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका के शब्दो मे 'वे इस जाति की अपने से अधिक ऊँची सभ्यता को मानने के लिए विवश हुए और धीरे-धीरे उन्होने उसके रीति-रिवाजो और उसकी भाषा को अपना लिया।' १६५५ ई० मे राजा चूचेगफा ने हिन्दू धर्म स्वीकार कर लिया और आसाम के अन्य अहोमो ने अगले कुछ वर्षो मे उसका अनुसरण किया।

नागा

नागा कौन और कहाँ से आये ? नागा लोग पहाड़ो मे रहते है और उनके नाम से ही उस पहाड का नाम 'नागा पहाड़ियाँ' पड गयी है। ब्रह्मपुत्र घाटी और उत्तरी बर्मा के बीच का पहाड़ी सीमान्त प्रदेश इन नागा लोगो का देश है। नागा का अर्थ कुछ लोग 'नग्न' या नगा बताते है। आसामी लोग पहाड़ियो की जनजातियो को 'नागा' कहते थे। उनकी मुख्य जातियाँ है—अगामी अओ, ल्होता, सेमा और रेंगमा। किसी भी अनभिज्ञ यात्री के लिए यह जानना कठिन है कि इनमें आपस मे क्या भेद है। ये विभिन्न गोत्रो और वंशो के लोग एक दूसरे से अलग-अलग रहते है। इस कारण ये एक दूसरे के बारे मे कुछ नही जानते। भारत के स्वतन्त्र होने पर स्वाधीनता का लाभ अन्य भारतीयो के समान नागा लोगो को भी मिलना चाहिए। इसी दृष्टि से

नागाओ और शेप भारतीयो के बीच पुराने सचार साधनो को पुन चालू किया जा रहा है। ये लोग भी शीघ्र ही लोकतन्त्रात्मक सस्थाओ के लिए अपने प्रतिनिधियो को चुनने और मतदान मे भाग लेने लगेगे। इस ओर ध्यान दिया जा रहा है कि इनमे तथा अन्य भारतीयो मे कोई भेद दिखाई न पडे। ये लोग भी पहाडियो के समान ही आसाम के अग है। यहाँ इस बात का उल्लेख कर देना उचित होगा कि मनुष्यो के सिरो का शिकार करने की प्रथा का अब अन्त हो गया है। इस प्रथा का दर्शन अब केवल इनके नृत्य द्वारा किया जा सकता है।

मध्यकाल के मुसलमान शासको की दृष्टि मे आसामी लोग युद्ध-प्रिय, लडाकू और लुटेरे थे जो डोगियो का बेडा बना कर ब्रह्मपुत्र नदी द्वारा डेल्टा मे पहुँच कर उसके समृद्ध जिलो मे लूट-मार कर वापस चले आते थे। दिल्ली के शासको ने इनको अपने अधीन बनाने की बहुत बार कोशिश की पर वे अपने प्रयत्न में कभी भी सफल न हुए। अन्त मे उन्होने लाचार होकर आसाम के एक भाग पर ही अपनी सत्ता स्थापित करके सन्तोप माना। दूसरे महायुद्ध के दिनों मे आसाम मे और इसके चारो ओर जो जगलयुद्ध हुआ वह इस प्रदेश के लोगो के लिए कोई नई बात नही थी। एक मुस्लिम इतिहासकार ने आसाम मे अपने समय मे हुई लडाई का वर्णन करते हुए लिखा है --"जब कभी हमला करने वाली सेना उनके देश मे प्रवेश करती थी, उस समय आसामी लोग सुदृढ दुर्गों में जाकर आश्रय ले लेते थे और अपने दुश्मन को खूब सताते थे। उस पर अचानक छापा मार कर, धावा बोल कर और रसद पहुँचाने के रास्ते काट कर उसे खूब परेशान करते थे। और जब बरसात का मौसम आता तब वे अपनी शत्रु सेना पर मौका देख कर जोरदार हमला करते और उन पर अपना गुस्सा उतारते थे। आक्रान्ता या तो उनके कैदी हो जाते थे या मारे जाते थे। इस प्रकार

शक्तिशाली और बहुत सी सेनाएँ विनाश के भँवर मे पड गई और एक भी आदमी बचा न रह सका।

पहाडो मे रहने वाले तथा मैदान मे रहने वाले आसामी लोगो का स्वाधीनता-प्रेम समान रूप से आज भी कायम है। पहाडो में रहने वाले आदिवासियो ने ब्रिटिश शक्ति का दृढता और बहुत साहस के साथ मुकाबला किया। यह इस बात से प्रकट है कि १८३२ से १८४९ के बीच उनको दण्ड देने के लिए दस सशस्त्र अभियान भेजे गये और इसी प्रकार १८६६ से १८८७ तक के समय मे आठ सशस्त्र अभियान और भेजे गये। आसाम की पहाडियो मे रहने वाले कबीलो को दबाने और वश मे रखने के लिए अंग्रेजो ने जितने अभियान भेजे, उतने तो पश्चिमोत्तर सीमा प्रान्त के लडाकू पठान कबीलो को अधीन रखने के लिए भी नही भेजे गये। देश के स्वाधीन होने के बाद से इन के रहन-सहन की स्थिति मे सुधार करने के लिए बहुत प्रयत्न किये गये है। ये आदिवासी आसाम के बहुत से भागो मे रहते है। इनके साथ घनिष्ठ परिचय प्राप्त करने के लिए पहाडो में ही जाना चाहिए जहाँ गोहाटी से अच्छी और पक्की सडक द्वारा जाया जा सकता है।

पहाडो की यात्रा पर जाने से पहले ब्रह्मपुत्र नदी द्वारा स्टीमर से गोहाटी से डिब्रूगढ जाना अधिक आनन्ददायक रहेगा। यह नदी-यात्रा थकान दूर कर देती है। इस यात्रा में उमानन्द का मन्दिर देखने योग्य है जो ब्रह्मपुत्र नदी के मध्य एक द्वीप पर बना हुआ है। गोहाटी और पाण्डु के बीच नीलाचल पर्वत पर कामाख्या देवी का मन्दिर है। देवी के दर्शनो के लिए हिन्दू दूर-दूर के प्रान्तो से भी आते है। यह मन्दिर आसाम मे शक्तिपूजा का एक दृढ दुर्ग है। इस पहाड के शिखर पर से दिखाई देने वाला दृश्य निश्चय ही मनोमुग्धकारी है।

गोहाटी

गोहाटी आसाम का प्रमुख शहर है। इसका प्राचीन नाम

प्राग्ज्योतिष्पुर है। गोहाटी कामरूप जिले का सदर मुकाम है। यही हाईकोर्ट और विश्व-विद्यालय है। गोहाटी विश्वविद्यालय अभी हाल ही मे स्थापित हुआ है और यह देखने योग्य है। इस शहर में राज्य का अजायबघर, आयुर्वेदिक कालेज, इजीनियरिंग स्कूल, फारेस्ट स्कूल और अन्य महत्वपूर्ण कालेज है। ये स्थान भी देखने योग्य है। ऐतिहासिक व पुरातत्व-अध्ययन सस्था में इतिहास सम्बन्धी शोधकार्य होता है।

शिलाग

शिलाग एक सुन्दर पहाडी स्थान है। इसकी सुषमा और शोभा का वर्णन शब्दो में सम्भव नही है। स्काटलैण्ड से आये एक पर्यटक ने इसका वर्णन इन शब्दो में किया है—'यह स्काटलैण्ड की उपत्यकाओ के समान है।' इसके चारो ओर के दृश्य को देखकर पर्यटक मोहित हो जाता है। परन्तु शिलाग में इससे कुछ अधिक आकर्षण है। यह ४,९०० फुट की ऊँचाई पर और खासी तथा जैन्तिया पहाडियो के बीच में बसा हुआ है। यह आसाम की राजधानी है। सरकारी इमारते भी यहाँ है जिनमें से अधिकाश १८९७ के भूकम्प के बाद की बनी हुई है। पहाडी स्थान पर आमोद-प्रमोद के जो साधन हो सकते हैं, वे सब यहाँ सुलभ है जैसे गोल्फ लिंक, घुडदौड का मैदान, पोलो का उत्तम मैदान, झील और सुन्दर होटल। मिशनरी कालेज और स्कूल पहले के समान शिक्षा देने का कार्य कर रहे है। सरकार आदिवासियो के कल्याण-कार्यो की ओर अब अधिकाधिक ध्यान दे रही है और उनकी स्वतन्त्र जीवनप्रणाली में किसी प्रकार का हस्तक्षेप नही किया जाता। शिलाग में बहुत कुछ ऐसा है जिसे शब्दो में व्यक्त नही किया जा सकता। शिलाग को लहरदार गलियो में घूमते हुए प्रसन्न नर-नारियो को देखकर मन एक नये उल्लास से भर जाता है। इसके बाद फिर मैदान मे रहने की इच्छा नही रहती।

नोगक्रेम शिलाग से लगभग १३ मील दूर है। यहाँ खासी लोग, खासकर जून मास में, अपना नृत्योत्सव करते है। इस नृत्य-उत्सव को

शिलांग, आसाम

देखने के लिए दूर-दूर के गाँवों के लोग आते हैं। नटों और नटियों
के नृत्य का मंत्र-मुग्धकारी जादू दर्शकों पर बहुत समय तक छाया
रहता है और महीनों तक उनके नृत्य की चर्चा गाँवों में होती रहती
है। समाज के कुशल और अकुशल सभी व्यक्ति इन नृत्यों में भाग लेते
हैं। दर्शक भी समाज के साथ नृत्य-उत्सव में भाग लेते हैं। नृत्य इन
प्रदेश के निवासी 'खासी लोगों' के जीवन का एक स्वाभाविक अंग है।

आसाम के आदिवासियो का एक नृत्य

वे नृ़य इस ढग से करते है मानो यह शास्त्र-विधि हो। सम्भवत यह शास्त्र विधि ही है। नृत्य करने वाले अपने नृत्य से ऐमी कला का प्रदर्शन करते हैं जिसका उनमें होने का भूल कर भी सन्देह नही किया जा सकता। नृत्य आत्मा की अभिव्यक्ति ही होती है।

चेरापूजी

शिलाग मे ३६ मील दूर चेरापूजी है जो मोटर मार्ग से जुडा हुआ है। यहाँ जितनी अधिक वर्पा होती है उतनी दुनिया के और किसी भाग में नही होती। इम विपय में इमने विश्व का सारा रेकार्ड तोड दिया है। साल मे यहाँ अधिकतम औसतन वर्पा ४२६ इच होती है। १८६१ में तो यहाँ ९०५ इच वर्पा हुई थी। टीन की चद्दर की छत पर मे लगातार टप-टप की आवाज आती रहती है।

चाय-उद्योग

मणिपुर रोड के किनारे-किनारे पर्यटक को चाय के बागान नजर आयेंगे। आसाम के लिए यह आश्चर्य की बात नहीं है। यहाँ ४,००,००० एकड़ भूमि में चाय पैदा होती है। भारतीय चाय उद्योग का यह सब से बड़ा केन्द्र है। सारे भारत में जितनी भूमि में चाय की खेती होती है उसका ३६ प्रतिशत भाग अकेले आसाम में ही है। चाय के बागान को देखने की व्यवस्था करना बहुत सरल है। चाय बागानों के मैनेजर बहुत अधिक अतिथि-सत्कार करने वाले हैं। ये लोग जो चाय पैदा करते हैं, उसे दुनिया भर के लोग पीते हैं। लेकिन बहुत कम लोग यह जानने की कोशिश करते हैं कि यह कैसे उत्पन्न होती है, इसमें कितना परिश्रम करना पड़ता है।

शिकारगाह

अफ्रीका के अतिरिक्त पशुओं, पक्षियों, तिर्यकों, और कीट पतंगों की विविध जातियाँ और किसी देश में उतनी नहीं पाई जातीं जितनी आसाम में मिलती हैं। आसाम के जंगलों में भारतीय गैंडों का पाया जाना वहाँ की एक विशेषता है क्योंकि अब गैंडे और कहीं नहीं पाये जाते। आसाम के जंगलों में हाथी, भैंसे, जंगली सांड, दलदली हिरन और बहुत से पशु पाये जाते हैं। फ्लोरिकोन और हार्न-बिल सदृश दुर्लभ पक्षी भी यहाँ के जंगलों में हैं। कोब्रा जाति के सांप भी यहाँ पाये जाते हैं। संसार में जितने शेर और तेंदुए हैं उनका एक बड़ा भाग आसाम के जंगलों में ही रहता है।

आसाम में इस समय बनैले पशु-पक्षियों के रहने के चार जगह और दो सुरक्षित वन हैं। इनको विनाश से बचाने के विचार से ऐसा किया गया है। इस प्रकार के पशु-स्थान और सुरक्षित जंगल ४६८ वर्ग मील में फैले हुए हैं। इनमें सर्वोत्तम है 'काजीरंगा सैंक्च्युअरी।' यह सिबसागर जिले में है। यह १६६ वर्ग मील में फैली और ब्रह्मपुत्र के दक्षिण

आसाम के गारो लोग

तट पर है। इस सैंक्च्युअरी में हवाई जहाज द्वारा भी पहुँचा जा सकता है। कलकत्ता से जोरहट या गोहाटी होकर वहाँ जाया जा सकता है। जोरहट से ६० मील और गोहाटी से १३० मील मोटर से जाना होता है। यहाँ कुल गेंडों की संख्या अनुमानत १५० है। हाथी पर चढ़ कर इनको नजदीक से देखा जा सकता है। सवारी के लिए यहाँ आसानी से हाथी मिल जाते हैं। परिवहन, निवास, और खाने-

पीने का यहाँ पर्याप्त प्रबन्ध है। यहाँ सर्दियों में आना अधिक अच्छा है। उस समय मौसम अच्छा होता है। तीन सैंक्च्युअरी और हैं. उत्तरी कामरूप या मानस सैंक्च्युअरी १६२ वर्ग मील में फैली और गौहाटी से ११० मील दूर है, सोनाई-रूप सैंक्च्युअरी, ८५ वर्ग मील में फैली और तेजपुर हवाईअड्डे से लगभग २० मील दूर है, और प्रभा या मिल्लौरी वर्फैलो सैंक्च्युअरी १९ वर्ग मील में फैली है। इस सैंक्च्युअरी तक लखीमपुर (लीलाबारी) हवाईअड्डे से ही पहुँचा जा सकता है। इनके अलावा आसाम में अच्छे शिकारगाह भी हैं। पक्षियों का शिकार करने के लिए भी यह प्रदेश उत्तम है। यहाँ शिकार हाथी पर चढ कर होता है। शिकार की चीजों में चाहा पक्षी, बत्तक, कबूतर, जंगली बटेर और तीतर होते हैं। पेशेवर शिकारी यहाँ नहीं हैं। परन्तु जंगलों के आस पास रहने वाले व्यक्ति शिकार करने में बड़े निपुण हैं और अपने इलाके के जानवरों और पक्षियों से तथा इनके स्वभाव से भली-भाँति परिचित हैं।

आसाम से विदा लेते हुए पर्यटक वेदना का अनुभव करता है। यहाँ घूमते हुए उसके मन में इतने भाव और विचार आते हैं कि उनको छाँटना सरल नहीं है। पर्यटक यहाँ विशाल उद्दाम वेग से प्रवाहित होती हुई नदी देखता है, जिस पर मानव अभी तक काबू नहीं पा सका है। यहाँ वह सुन्दर और शानदार जानवरों से पूर्ण सघन जंगल तथा बाग देखता है जिन में गगनचुम्बी ऊँचे-ऊँचे वृक्ष हैं और रोडोडेंड्रोन (गुलाब के आकार के फूल) फूलों के तथा २५० प्रकार के रंग-बिरंगे अन्य पुष्पों के उद्यान हैं। यहाँ सन्तरे और अनानास बहुतायत से होते हैं। खासी, जैन्तिया नागा तथा लुशाई नामक तीन पर्वतमालाएं भी शोभायमान हैं।

सचार

विभाजन के कारण आसाम शेष देश से और भी अधिक दूर हो गया है। आसाम जाने का एकमात्र मार्ग देश के उस भाग से

होकर था जो आजकल पूर्वी पाकिस्तान है। अत देश के साथ आसाम को जोडने के लिए 'आसाम-रेल-लाइन' बनाई गई। भारतीय इंजीनियरिंग का यह एक अद्भुत कौशल और चमत्कार है। निश्चित समय से पहले ही यह तैयार भी हो गई, परन्तु यह मार्ग बडा चक्करदार है। गोहाटी और कलकत्ता के बीच हवाई सर्विस भी है और हवाईजहाज नियमित रूप से आते-जाते हैं। आसाम जाने के लिए हवाई सर्विस अधिक सुविधाजनक रहेगी।

मणिपुर

दीमापुर से मणिपुर-रोड तक पक्की सडक चली गई है और यह सडक मणिपुर जाती है। मणिपुर पहले एक अलग राज्य था। अब यह अन्य रियासतो की भाँति भारत-संघ मे विलय हो गया है पर प्रशासन की दृष्टि से यह एक स्वतन्त्र इकाई है। इसकी यह पृथकता अत्यन्त प्राचीन काल से चली आयी है।

सम्भवत इस घाटी मे पहले विभिन्न आदिमजातियाँ रहती थी जो भिन्न-भिन्न दिशाओ से यहाँ आयी। यद्यपि मुखाकृति की दृष्टि से मणिपुर के लोग मगोल मालूम देते है परन्तु इनमें कुछ ऐसे भी है जो आर्य जाति के मालूम देते हैं। यहाँ का प्रधान धर्म हिन्दू धर्म है। यह धर्म इस देश मे कब और कहाँ से आया यह बताना कठिन है। मणिपुरी लोग अपने आप को 'मैथेई' कहते हैं। इन्होंने अपना सामाजिक ढाँचा स्वत विकसित किया है जो आज भी विद्यमान है और भारत के शेष सामाजिक ढाँचो से भिन्न है। मणिपुर मे स्त्रियो का स्थान ऊँचा है।

मणिपुर का राष्ट्रीय खेल पोलो है और यह खेल इस देश का अपना है। यह कही बाहर से नही आया है। पोलो और हाकी इस सारे प्रदेश मे अत्यन्त उत्साह के साथ खेली जाती है। परन्तु मणिपुर के लोगो की अपनी मनोरजन की विशेष चीज सगीत और नृत्य है। नर-नारी, बाल-वृद्ध यहाँ सब नृत्य करना जानते हैं। कोई भी निमित्त हो, ये लोग नृत्य तुरन्त आरम्भ कर देते हैं। इनकी नृत्य शैली सबसे

भिन्न है। यह शैली सुन्दर और आकर्षक है। शान्तिनिकेतन में कवीन्द्र रवीन्द्र ने जिस बंगाली नृत्य-कला का पोषण किया उसका उद्गम और स्रोत यही मणिपुरी नृत्य है और महाकवि ने इस ऋण को सदा साभार स्वीकार किया है। राधा-कृष्ण का मणिपुरी नृत्य अद्भुत-लोमहर्षक और अत्यन्त आनन्दवर्द्धक होता है। ध्यान देने की बात यह है कि इनके नृत्य के साधन बहुत सरल है। इन नृत्यों के लिए अलंकार का साज-सामान प्रकृति प्रदान करती है। इस घाटी के चारों ओर पहाड़ ही पहाड़ है। ये पहाड़ियां २,५०० फुट से ५,००० फुट तक ऊँची है। इसकी राजधानी इम्फाल है। वहां बड़ी-बड़ी प्राकृतिक झीलें है जिनकी शोभा बत्तकों के तैरने रहने से दुगुनी हो जाती है।

परिशिष्ट १

होटल दर्शिका

स्थान	होटल
कलकत्ता	ग्राड होटल
	ग्रेट ईस्टर्न होटल
	स्पेनसेज होटल
शान्तिनिकेतन	रत्नकुटी अतिथि गृह
दार्जिलिंग	विडमियर होटल
	होटल माउण्ट एवरेस्ट
शिलाग	पाइनवुड होटल
	फर्नडेल होटल
	पीक होटल
कुर्मियोग	कैसिनो होटल
	प्लेन्स्व्यू होटल
कलिम्पोग	हिमालयन होटल

परिशिष्ट २ (ख)

पर्यटको की दिलचस्पी के स्थान जहां डाक वगला आदि हैं

स०	स्थान का नाम	ठहरने का दैनिक किराया	खानसामा साथ है या नही	जगह सुरक्षित कराने के लिए किस अधिकारी से पूछना चाहिए और सूचना देने की अवधि
१	टाइगर हिल (दार्जिलिंग)	४ कमरे ३ रु०	नही	डिप्टी कमिश्नर, दार्जिलिंग। एक पखवाडा पहले सूचना देनी चाहिए
२	सेनचाल	डाकबगला २ कमरे ३ रु०	नही	"
३	बादामतम	"	नही	"
४	लोपचू	"	नही	"
५	जोरपोघरी	"	नही	"
६	टोग्लू	"	नही	"
७	सदक्फू	"	नही	"
८	फलूत	"	नही	"
९	गगटोक	डाकबगला ४ कमरे ४ रु०	नही	"

१०	पेडम	डाक बंगला २ कमरे ३ रु०	नही	
११	कुर्सियांग	इन्स्पेक्शन बंगला २ कमरे ३ रु०	नही	
१२	कलिम्पोंग	इन्स्पेक्शन बंगला ४ कमरे ३ रु०	नही	
१३	शिलांग	सर्किट हाउस और डाक बंगला सम्मिलित। डबल कमरे ३ रु०	नही	डिप्टी कमिश्नर, यूनाइटेड खासी-जैन्तिया हिल्स, आसाम। दस दिन पूर्व सूचना।
१४	काजीरंगा	बगूरी मे फारेस्ट इन्स्पेक्शन बंगला २ कमरे ३ रु०	हाँ	डिविजनल फारेस्ट आफिसर, सिब-सागर, पो० जोरहट, आसाम। १० दिन पूर्व सूचना।

परिशिष्ट २ (ख)

पर्यटको की दिलचस्पी के स्थान जहां डाक बंगला आदि है

स०	स्थान का नाम	ठहरने का दैनिक किराया	खानसामा साथ है या नही	जगह सुरक्षित कराने के लिए किस अधिकारी से पूछना चाहिए और सूचना देने की अवधि
१	टाइगर हिल (दार्जिलिंग)	४ कमरे ३ रु०	नही	डिप्टी कमिश्नर, दार्जिलिंग। एक पखवाडा पहले सूचना देनी चाहिए
२	सेनचाल	डाकबंगला २ कमरे ३ रु०	नही	"
३	बादामतम	"	नही	"
४	लोपचू	"	नही	"
५	जोरपोखरी	"	नही	"
६	टोंग्लू	"	नही	"
७	सदक्फू	"	नही	"
८	फलूत	"	नही	"
९	गंगटोक	डाकबंगला ४ कमरे ४ रु०	नही	"

१०	रेटम	डाक बंगला २ कमरे ३ रु०	नहीं	"
११	कुर्सिं ोग	इन्स्पेक्शन बंगला २ कमरे ३ रु०	नही	"
१२	कलिम्पोग	इन्स्पेक्शन बंगला ४ कमरे ३ रु०	नही	"
१३	शिलाग	सर्किट हाउस और डाक बंगला सम्मिलित । डबल कमरे ३ रु०	नही	डिप्टी कमिश्नर, यूनाइटेड खासी-जैन्तिया हिल्स, आसाम। दस दिन पूर्व सूचना।
१४	काजीरंगा	बगूरी मे फारेस्ट इन्स्पेक्शन बंगला २ कमरे ३ रु०	हाँ	डिविजनल फारेस्ट आफिसर, सिब-सागर, पो० जोरहट, आसाम । १० दिन पूर्व सूचना ।

परिशिष्ट ३

पूर्वी भारत के मुख्य पर्यटन केन्द्र

यात्रा केन्द्र	रेल मार्ग द्वारा कलकत्ता से दूरी	कलकत्ता से कैसे जायें	सवारी	दर्शनीय स्थान
शान्तिनिकेतन	९३ मील	रेल से	स्टेशन से टैक्सी मिलती है	डा० रवीन्द्रनाथ ठाकुर द्वारा स्थापित विश्व भारती।
दार्जिलिंग	४१६ मील	विमान और रेल (बागडोगरा हवाईअड्डा)	स्टेशन और हवाईअड्डे पर टैक्सी प्राप्य	बोटेनिकल गार्डन, नेचुरल हिस्ट्री म्यूजियम, आबजरवेट्री हिल, बर्च हिल पार्क, घूम मठ, सेनोहल झील, टाइगर हिल, जल पहाड।
कर्सियोग	३९६ मील	,,	,,	बौद्ध मठ, विहारी मंदिर, मारवाडी मंदिर, शिव मंदिर, रोमन कैथलिक, प्रोटेस्टेन्ट और मिशन गिर्जे, रेशम कीडे–पालन केन्द्र, डाउ हिल और ईगल्स क्रैग।
कलिम्पोंग	३९९ मील	,,	,,	सेंट ऐंड्रूज कालोनियल होम्स, कलिम्पोंग आर्ट्स एंड क्राफ्ट्स, गवर्नमेंट डिमान्स्ट्रेशन फार्म, तिब्बती मठ, कलिम्पोंग मेला (दिसम्बर के आरम्भ में होता है), भूटान दरबार।

सिक्किम	३५७ मील (वायु तथा सड़क मार्ग से)	वागडोगरा तक विमान से और फिर सड़क से	हवाई अड्डे पर टैक्सी प्राप्य	बैलगाड़ी की यात्रा के लिये आदर्श स्थान।
शिलांग	६०३ मील	विमान और रेल से (गोहाटी में हवाई अड्डा)	स्टेशन और हवाई अड्डे पर टैक्सी प्राप्य	वार्ड्स झील, बीडन और विशप जल प्रपात, गवर्नमेंट फ्रूट गार्डन, शिलांग पीक, अपर शिलांग गवर्नमेंट फार्म, बड़ा बाजार, क्रिनोलिन जल प्रपात, तैरने का तालाब।
गोहाटी	६३१ मील	विमान और रेल से		कामाख्या मन्दिर, अश्वक्रान्त, नवगृह, वशिष्ट आश्रम और उमानन्द।
मणिपुर	७८६ मील (मणिपुर रोडस्टेशन)	रेल तथा विमान से (इम्फाल का हवाईअड्डा)	रेलवे स्टेशन से बस मिलती है	सुन्दरग्राम्य दृश्य
काज़ीरंगा	९२३ मील	रेल और विमान से (जोरहट का हवाई अड्डा)	हवाई अड्डे से परिवहन का प्रबन्ध करने के लिए डिविजनल फारेस्ट आफिसर, सिवसागर, पो० जोरहट के साथ पहले से पत्र व्यवहार करें	जंगली जानवरों का स्थान

परिशिष्ट ४

बिक्री केन्द्र और वस्तुएं

शहर का नाम	वस्तुओ का विवरण
कलकत्ता	देश के सबभागो के वस्त्र, रेशम (मुर्शिदाबादी, काश्मीरी, बगलोरी) बनारसी जरी और साडियाँ ।
	सूती वस्त्र (छपा हुआ, हाथ का बुना और हाथ से छपा)
	दर्पणी चोली का कपडा और थैले ।
	कढे हुए थैले ।
	सोने-चादी के आभूषण ।
	भारतीय चप्पल और नगरा, काँच की चूडियाँ ।
	भारतीय इत्र ।
	चन्दन की बुकनी ।
	चान्दी का काम, पीतल का काम, हाथी दाँत का काम और मिट्टी के बर्तन ।
	जयपुरी शैली के और अन्य शैलियो के चित्र ।
	सीपी की बनी चीजें ।
	शान्तिनिकेतन की बनी चीजे ।
	लोई, बुस्सा और दरियाँ ।
	कृष्णनगर के बने मिट्टी के नमूने ।
	सुगन्धित द्रव्य—धूप, बत्ती अगरबत्ती आदि ।

	पेपियर मेशी, लकडी का काम, शाल, गुडियां ।
दार्जिलिंग	तिब्बती और नेपाली अद्भुत चीजें, देशी आभूषण, पत्थर, पीतल के पुराने बर्तन, लकडी के छोटे सन्दूक और पेटियां ।
कलिम्पोंग	दरियां, चमडे की वस्तुएं, फीते और गोट, कसीदा की कढाई तिब्बती और नेपाली अद्भुत चीजें।
शान्तिनिकेतन	चमडे का काम किया हुआ मोढा, चमडे की जजीर के बटुए, चमडे के पुस्तकीय आवरण, मिट्टी के बर्तन, हाथ के बुने हुए वस्त्र ।
शिलांग	मणिपुरी थैले, कबल, पलग की चादरें, लुशाई थैले और सूती वस्त्र ।

परिशिष्ट ४

बिक्री केन्द्र और वस्तुएं

शहर का नाम	वस्तुओ का विवरण
कलकत्ता	देश के सबभागो के वस्त्र, रेशम (मुर्शिदाबादी, काश्मीरी, बगलोरी) बनारसी जरी और साडियां ।
	सूती वस्त्र (छपा हुआ, हाथ का बुना और हाथ से छपा)
	दर्पणी चोली का कपडा और थैले ।
	कढे हुए थैले ।
	सोने-चादी के आभूषण ।
	भारतीय चप्पल और नगरा, कांच की चूडियां ।
	भारतीय इत्र ।
	चन्दन की बुकनी ।
	चान्दी का काम, पीतल का काम, हाथी दांत का काम और मिट्टी के बर्तन ।
	जयपुरी शैली के और अन्य शैलियो के चित्र ।
	सीपी की बनी चीजे ।
	शान्तिनिकेतन की बनी चीजें ।
	लोई, धुस्सा और दरियां ।
	कृष्णनगर के बने मिट्टी के नमूने ।
	सुगन्धित द्रव्य–धूप, बत्ती अगरबत्ती आदि ।

काली पूजा	अक्तूबर/नवम्बर	कलकत्ते मे यह सब धूम-धाम से होती है। पश्चिम बंगाल के अन्य भागो मे भी यह छोटे पैमाने पर होती है।
		पश्चिम बंगाल और आसाम मे सर्वत्र मनाई जाती है।
दिवाली	अक्तूबर/नवम्बर	" " " " " " " "
होली	मार्च	" " " " " " मनाया जाता है।
	अगस्त/सितम्बर	" " " " " "
	सितम्बर/अक्तूबर	
	अक्तूबर/नवम्बर	यह पश्चिम बंगाल और आसाम मे सर्वत्र मनाई जाती है विशेषत जहाँ वैष्णव सम्प्रदाय है। मणिपुर मे रासलीला बड़ी धूम-धाम से मनाई जाती है। इस अवसर पर मणिपुर के नृत्य करने वाले भगवान कृष्ण की जीवन लीलाओं को नृत्य द्वारा दिखाते हैं।
	फरवरी/मार्च	पश्चिम बंगाल और आसाम मे सर्वत्र मनाई जाती है।
दिन	२५ दिसम्बर	कलकत्ते मे और पूर्वी भारत के उन शहरों मे जहाँ ईसाइयों की बस्तियाँ हैं, यह खास तौर पर मनाया जाता है।
ईस्टर	मार्च/अप्रैल	"
रामकृष्ण उत्सव	फरवरी/मार्च	बेलूर मे—कलकत्ता से छ मील दूर।
प्रथम वैशाख	अप्रैल/मई	बंगाली नव-वर्ष के रूप मे पश्चिम बंगाल मे मनाया जाता है।
फसल काटने का उत्सव	जून	नोंगक्रेम—शिलांग से ७ मील दूर।

परिशिष्ट ५

मुख्य उत्सव और पर्व

उत्मव और पर्व	उत्सव का समय	उत्सव व पर्व का स्थान
दुर्गा प्‌जा	सितम्वर/अक्तूवर	कलकत्ते मे विशेप धम-धाम से की जाती है। पश्चिम वगाल और आसाम के अन्य भागो मे भी यह छोटे पैमाने पर की जाती है।
सरस्वती पूजा	जनवरी/फरवरी	कलकत्ते मे यह विशेप रूप से मनाई जाती है। पश्चिम वगाल और आसाम के अन्य भागो मे भी यह छोटे पैमाने पर मनाई जाती है।
गगासागर मेला	जनवरी	वगाल की खाडी स्थित सागर द्वीप मे यह मेला लगता है। सवसे अधिक सुरक्षित, छोटा और कम खर्च का मार्ग है—डायमड हार्वर होकर रेल और स्टीमर से सागर द्वीप जाना। मेले के दिनो मे कलकत्ता (सिआलदह) से वहुत सी स्पेशल ट्रेनें छूटती है जो नदी के किनारे डायमड हार्वर तक पहुँचा देती है। यहां से तीर्थयात्री मेले के दिनो मे डायमड हार्वर और सागर द्वीप के वीच चलने वाले स्टीमर से जा सकता है।

काली पूजा	अक्तूबर/नवम्बर	कलकत्ते में यह खूब धूम-धाम से होती है। पश्चिम बंगाल के अन्य भागों में भी यह छोटे पैमाने पर होती है।
दिवाली	अक्तूबर/नवम्बर	पश्चिम बंगाल और आसाम में सर्वत्र मनाई जाती है।
होली	मार्च	" " " " " " " "
जन्माष्टमी	अगस्त/सितम्बर	" " " " " " " "
मुहर्रम	सितम्बर/अक्तूबर	" " " " " " मनाया जाता है।
रामलीला	अक्तूबर/नवम्बर	यह पश्चिम बंगाल और आसाम में सर्वत्र मनाई जाती है विशेषत जहाँ वैष्णव सम्प्रदाय है। मणिपुर में रामलीला बड़ी धूम-धाम से मनाई जाती है। इस अवसर पर मणिपुर के नृत्य करने वाले भगवान कृष्ण की जीवन लीलाओं को नृत्य द्वारा दिखाते हैं।
शिवरात्रि	फरवरी/मार्च	पश्चिम बंगाल और आसाम में सर्वत्र मनाई जाती है।
बड़ा दिन	२५ दिसम्बर	कलकत्ते में और पूर्वी भारत के उन शहरों में जहाँ ईसाइयों की बस्तियाँ है, यह खास तौर पर मनाया जाता है।
ईस्टर	मार्च/अप्रैल	" "
रामकृष्ण उत्सव	फरवरी/मार्च	बेलूर में—कलकत्ता से छ मील दूर।
प्रथम बैशाख	अप्रैल/मई	बंगाली नव-वर्ष के रूप में पश्चिम बंगाल में मनाया जाता है।
फसल काटने का उत्सव	जून	नोंगक्रेम—शिलांग से ७ मील दूर।

परिशिष्ट ५

मुख्य उत्सव और पर्व

उत्सव और पर्व	उत्सव का समय	उत्सव व पर्व का स्थान
दुर्गा पूजा	सितम्बर/अक्तूबर	कलकत्ते में विशेष धूम-धाम से की जाती है। पश्चिम बंगाल और आसाम के अन्य भागों में भी यह छोटे पैमाने पर की जाती है।
सरस्वती पूजा	जनवरी/फरवरी	कलकत्ता में यह विशेष रूप से मनाई जाती है। पश्चिम बंगाल और आसाम के अन्य भागों में भी यह छोटे पैमाने पर मनाई जाती है।
गंगासागर मेला	जनवरी	बंगाल की खाड़ी स्थित सागर द्वीप में यह मेला लगता है। सबसे अधिक सुरक्षित, छोटा और कम खर्च का मार्ग है—डायमंड हार्बर होकर रेल और स्टीमर से सागर द्वीप जाना। मेले के दिनों में कलकत्ता (सिआलदह) से बहुत सी स्पेशल ट्रेनें छूटती हैं जो नदी के किनारे डायमंड हार्बर तक पहुँचा देती हैं। यहाँ से तीर्थयात्री मेले के दिनों में डायमंड हार्बर और सागर द्वीप के बीच चलने वाले स्टीमर से जा सकता है।

काली पूजा	अक्तूबर/नवम्बर	कलकत्ते मे यह खूब धूम-धाम मे होती है। पश्चिम बगाल के अन्य भागो में भी यह छोटे पैमाने पर होती है।
दिवाली	अक्तूबर/नवम्बर	पश्चिम बगाल और आसाम मे सर्वत्र मनाई जाती है।
होली	मार्च	" " " " " " " "
जन्माष्टमी	अगस्त/सितम्बर	" " " " " " " "
मुहर्रम	सितम्बर/अक्तूबर	" " " " " " मनाया जाता है।
रामलीला	अक्तूबर/नवम्बर	यह पश्चिम बगाल और आसाम मे सर्वत्र मनाई जाती है विशेषत जहाँ वैष्णव सम्प्रदाय है। मणिपुर मे रासलीला बडी धूम-धाम से मनाई जाती है। इस अवसर पर मणिपुर के नृत्य करने वाले भगवान कृष्ण की जीवन लीलाओ को नृत्य द्वारा दिखाते हैं।
शिवरात्रि	फरवरी/मार्च	पश्चिम बगाल और आसाम मे सर्वत्र मनाई जाती है।
बडा दिन	२५ दिसम्बर	कलकत्ते मे और पूर्वी भारत के उन शहरो में जहाँ ईसाइयो की बस्तियाँ है, यह खास तौर पर मनाया जाता है।
ईस्टर	मार्च/अप्रैल	" "
रामकृष्ण उत्सव	फरवरी/मार्च	बेलूर में—कलकत्ता मे छ मील दूर।
प्रथम वैशाख	अप्रैल/मई	बगाली नव-वर्ष के रूप में पश्चिम बगाल मे मनाया जाता है।
फसल काटने का उत्सव	जून	नोगक्रेम—शिलाग से ७ मील दूर।

परिशिष्ट ५

मुख्य उत्सव और पर्व

उत्सव और पर्व	उत्सव का समय	उत्सव व पर्व का स्थान
दुर्गा पूजा	सितम्बर/अक्तूबर	कलकत्ते मे विशेष धूम-धाम से की जाती है। पश्चिम बगाल और आसाम के अन्य भागो मे भी यह छोटे पैमाने पर की जाती है।
सरस्वती पूजा	जनवरी/फरवरी	कलकत्ते मे यह विशेष रूप मे मनाई जाती है। पश्चिम बगाल और आसाम के अन्य भागो मे भी यह छोटे पैमाने पर मनाई जाती है।
गंगासागर मेला	जनवरी	बगाल की खाडी स्थित सागर द्वीप मे यह मेला लगता है। सबसे अधिक सुरक्षित, छोटा और कम खर्च का मार्ग है—डायमड हार्बर होकर रेल और स्टीमर मे सागर द्वीप जाना। मेले के दिनो मे कलकत्ता (सिआलदह) से बहुत सी स्पेशल ट्रेने छूटती हैं जो नदी के किनारे डायमड हार्बर तक पहुँचा देती है। यहाँ से तीर्थयात्री मेले के दिनो मे डायमड हार्बर और सागर द्वीप के बीच चलने वाले स्टीमर मे जा सकता है।

६ टूरिस्ट इन्फमॅशन। आफिसर,
दि माल, आगरा (फोन न० ३७७)

७ टूरिस्ट रिसेप्शन एण्ड इन्फर्मेशन आफिसर,
१५-बी, दि माल, बनारस (फोन न० १८९)

८ टूरिस्ट रिसेप्शन एण्ड इन्फर्मेशन आफिसर,
१६-ए, महात्मा गान्धी रोड, बगलोर,
(फोन नं० ४५०५)

९ टूरिस्ट रिसेप्शन एण्ड इन्फर्मेशन आफिसर,
राजस्थान होस्टल, जयपुर (फोन न० ११८२)

१० टूरिस्ट रिसेप्शन एण्ड इन्फर्मेशन आफिसर,
कृष्ण-विलास, स्टेशन रोड, औरंगाबाद
(फोन नं० १७)

११. टूरिस्ट रिसेप्शन एण्ड इन्फर्मेशन आफिसर,
कमिश्नर रोड, उदकमण्डलम् (फोन नं० ३४१६)

१२ टूरिस्ट रिसेप्शन एण्ड इन्फर्मेशन आफिसर,
चौरस्ता, दार्जिलिंग (फोन न० ५०)

१३. टूरिस्ट रिसेप्शन एण्ड इन्फर्मेशन आफिसर,
दि रिज, शिमला (फोन नं० ३३११)

१४ डायरेक्टर
गवर्नमेण्ट आफ इण्डिया टूरिस्ट आफिस,
९, ईस्ट ४९ वी स्ट्रीट, न्यूयार्क-१७, एन० वाई०
(फोन न० मरे हिल बी-२२४५)

१५ डायरेक्टर,
गवर्नमेण्ट आफ इण्डिया टूरिस्ट आफिस,
२८ काकस्पर स्ट्रीट (ट्राफलगर स्क्वायर),
लन्दन एस० डब्ल्यू० १
(फोन न० ट्राफलगर १७१७-८)

१६ मैनेजर,
गवर्नमेण्ट आफ इण्डिया टू[illegible] [illegible]फिस,
६८५, मार्केट स्ट्री[illegible]
(फो[illegible]

परिशिष्ट ६

पर्यटक, आवश्यकता पडने पर अपने-अपने यात्रा केन्द्रो में निम्न अधिकारियो से सहायता प्राप्त कर सकते है ।

यात्रा केन्द्र	अधिकारी का पद
कलकत्ता	रीजनल टूरिस्ट आफिसर, कलकत्ता
दार्जिलिग	डिप्टी कमिश्नर, दार्जिलिग और टूरिस्ट-रिसेप्शन एण्ड इन्फमेंशन आफिसर, टूरिस्ट ब्यूरो बिल्डिग, चौरास्ता, दार्जिलिग ।
कुर्सियोग	सब डिविजनल आफिसर, कुर्सियोग
कलिम्पोग	सब-डिविजनल आफिसर, कलिम्पोग
सिक्किम	डिप्टी कमिश्नर, दार्जिलिग
शिलाग	डिप्टी कमिश्नर, शिलाग
काजीरगा	डिविजनल फारेस्ट आफिसर, सिव-सागर, पो० जोरहट

६. टूरिस्ट इन्फर्मेशन आफिसर,
दि माल, आगरा (फोन न० ३७७)

७ टूरिस्ट रिसेप्शन एण्ड इन्फर्मेशन आफिसर,
१५-बी, दि माल, बनारस (फोन न० १८९)

८ टूरिस्ट रिसेप्शन एण्ड इन्फर्मेशन आफिसर,
१६-ए, महात्मा गान्धी रोड, बगलोर,
(फोन न० ४५०५)

९ टूरिस्ट रिसेप्शन एण्ड इन्फर्मेशन आफिसर,
राजस्थान होस्टल, जयपुर (फोन न० ११८२)

१० टूरिस्ट रिसेप्शन एण्ड इन्फर्मेशन आफिसर,
कृष्ण-विलास, स्टेशन रोड, औरगाबाद
(फोन न० १७)

११. टूरिस्ट रिसेप्शन एण्ड इन्फर्मेशन आफिसर,
कमिश्नर रोड, उदकमण्डलम् (फोन नं० ३४१६)

१२ टूरिस्ट रिसेप्शन एण्ड इन्फर्मेशन आफिसर,
चौरस्ता, दार्जिलिंग (फोन नं० ५०)

१३ टूरिस्ट रिसेप्शन एण्ड इन्फर्मेशन आफिसर,
दि रिज, शिमला (फोन नं० ३३११)

१४ डायरेक्टर
गवर्नमेण्ट आफ इण्डिया टूरिस्ट आफिस,
९, ईस्ट ४९ वी स्ट्रीट, न्यूयार्क-१७, एन० वाई०
(फोन न० मरे हिल वी-२२४५)

१५ डायरेक्टर,
गवर्नमेण्ट आफ इण्डिया टूरिस्ट आफिस,
२८ काकस्पर स्ट्रीट (ट्राफल्गर स्क्वायर),
लन्दन एस० डब्ल्यू० १
(फोन नं० ट्राफलगर १७१७-८)

१६ मैनेजर,
गवर्नमेण्ट आफ इण्डिया टूरिस्ट आफिस,
६८५, मार्केट स्ट्रीट, सानफ्रांसिस्को
(केलिफोर्निया)

प्रकाशक

पर्यटन विभाग,

परिवहन मंत्रालय, नई दिल्ली

६ टूरिस्ट इन्फर्मेशन आफिसर,
दि माल, आगरा (फोन न० ३७७)
७. टूरिस्ट रिसेप्शन एण्ड इन्फर्मेशन आफिसर,
१५-बी, दि माल, बनारस (फोन न० १८९)
८ टूरिस्ट रिसेप्शन एण्ड इन्फर्मेशन . फसर,
१६-ए, महात्मा गान्धी रोड, बंगलोर,
(फोन न० ४५०५)
९ टूरिस्ट रिसेप्शन एण्ड इन्फर्मेशन आफिसर,
जयपुर (फोन न० ११८२)
१० टूरिस्ट . आफिसर,
-विलास, औरंगाबाद
(. १७)
११. टूरि- शन एण्ड इन्फर्मेशन आफिसर,
कमिश्नर रोड, उदकमण्डलम् (फोन न० ३४१६)
१२ टूरिस्ट रिसेप्शन एण्ड इन्फर्मेशन आफिसर,
चौरस्ता, दार्जिलिंग (फोन नं० ५०)
१३ टूरिस्ट रिसेप्शन एण्ड इन्फर्मेशन आफिसर,
दि रिज, शिमला (फोन नं० ३३११)
१४ डायरेक्टर
गवर्नमेण्ट आफ इण्डिया टूरिस्ट आफिस,
९, ईस्ट ४९ वी स्ट्रीट, न्यूयार्क-१७, एन० वाई०
(फोन न० मरे हिल बी-२२४५)
१५ डायरेक्टर,
गवर्नमेण्ट आफ इण्डिया टूरिस्ट आफिस,
२८ काकस्पर स्ट्रीट (ट्राफल्गर स्क्वायर),
लन्दन एस० डब्ल्यू० १
(फोन नं० ट्राफलार १७१७-८)
१६ मैनेजर,
गवर्नमेण्ट आफ इण्डिया टूरिस्ट आफिस,
६८५, मार्केट स्ट्रीट, सानफ्रांसिस्को
(कैलिफोर्निया)